मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • पूर्ण अंक २२६ • अंक मई-२०२६

चंदनका वाघा

आम का अन्नकूट



प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001 Rs.5/-



भुज मंदिर के २०३ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक तथा सभा को आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



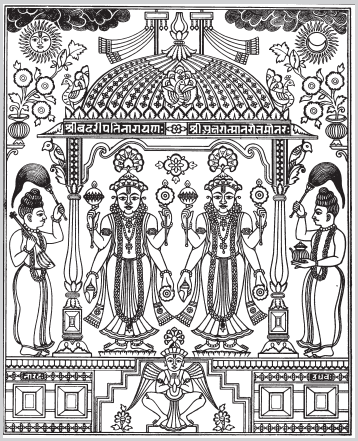
कोडाय (कच्छ) मंदिर के पाटोत्सव पर ठाकुरजी की आरती उतारते तथा सभा को आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



मेघपर (कच्छ) मंदिर के पाटोत्सव पर ठाकुरजी की आरती उतारते और सभा में दर्शन देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



नारणपर उपलोवास (कच्छ) मंदिर के २० वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते और सभा में दर्शन देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८

श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

नारायणपुरा, अहमदाबाद.

फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७

www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८

श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी

आज्ञा से

तंत्रीश्री

स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(महंत स्वामी)

मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,

अहमदाबाद-३८० ००१.

मो. ९३१३७०६०९५

magazine@swaminarayan.in

www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये

E-mail :

magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र



वर्ष - १९ ● अंक : २२६ ● मई-२०२६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०४.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से आशीर्वचन	०६
०५.	यु.के. विदेश सत्संग विचरण	०८
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से	०९
०६.	भक्ति सुधा	१०
०७.	सत्संग समाचार	१४

અસ્મદીયમ્



श्री स्वामिनारायण

ईस ब्रह्मांड में अरबो की संख्या में मानव रहते है। प्रत्येक का परमकृपालु परमात्मा पालन करते है। पापी है तो भी उसका पोषण करते है। भगवान के दरबार में कोई भेदभाव नही है। जो कुछ है वह हम करते है। वहाँ पर सभी के लिये – न्याय समान है।

हम सभी को भगवानने यह अति मूल्यवान शरीर मनुष्य के रुप में कई जन्मो के बाद दिये है। उस भगवान को हम भूल गये है। मानव जीवन के कर्म हम सभी को ज्ञात है फिर भी हम लोग उस रास्ते पर चलते नही है। परमात्मा के नाम का माला प्रतिदिन फेरते है। लेकिन माँ के गर्भ में दिये गये प्रतिज्ञा को भूल गये है। श्रीहरि ने दीन-दु:खी की मदद आश्रित मात्र कहे है। हम जो कुछ भी अच्छा करे तो उसे किसी को बताने था वाह वाही या सम्मान की ईच्छा से नही करना चाहिए। प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री का यही ध्येय है। कि भगवान की भजन करे तथा मानवता के मूल्य को भूलना नही चाहिए। शिक्षापत्री भी हम सभी को यही सिखाती है।

इस समय भीषण गर्मी पड रही है। भगवान को चंदनवाला परिधान धारण किया जाता है। जिससे शीतलता मिले। औऱ दर्शनार्थियो को दर्शन करते ही मन-चित्त में शांति आये। ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है।

दूसरा आज कई देशो में पानी की समस्या है। यह प्रतिवर्ष बढती ही जा रही है। यदि हम इसका मूल्य समझे। अपने घर परिवार से शुरु करे। पानी का दुरुपयोग नही करे। आवश्यकतानुसार प्रयोग करे। यह आवश्यक है। अपने देश में वर्षा अनियमित होती है। उसका मुख्य कारण हम सभी प्रकृति के साथ खिलवाड करते हे। वनो से वृक्ष काटे जा रहे है। और कंक्रीट के जंगल बढते जा रहे है। सडक चौडी करने के लिये पेड और पहाड काटे जा रहे है। यह सब प्रकृति के विपरीत कृत्य हो रहा है। परमकृपालु परमात्मा से प्रार्थना करे कि इससे सभी लोग बोध पाठ ग्रहण करे।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की

रुपरेखा

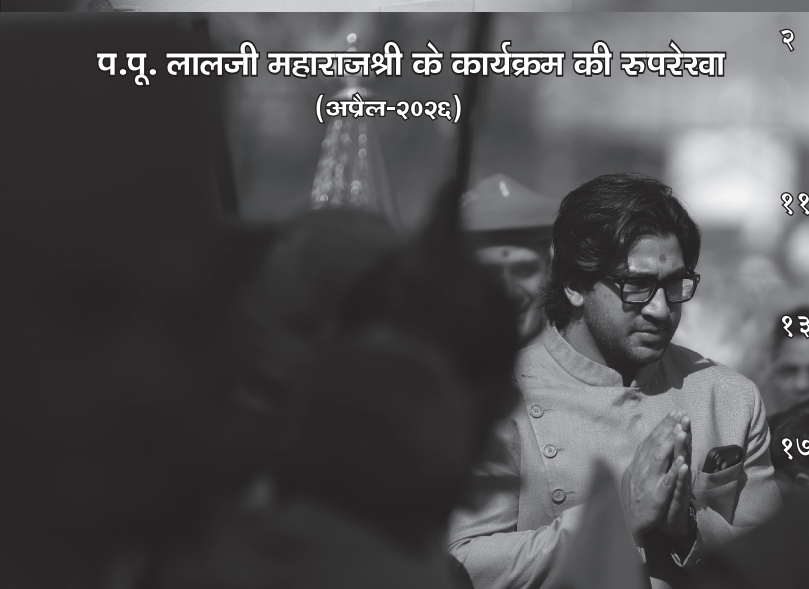
(अप्रैल-२०२६)



२	उनावा गाँव में प्रसादी का छत्रीवाला श्री हनुमानदादा की पुनःप्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।
३-४	श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) श्री घनश्याम महाराज के पाटोत्सव अवसर पर पधारना।
१३	एकादशी को श्री नरनारायणदेवना दर्शन हेतु पधारना।
१७-१८	श्री स्वामिनारायण मंदिर मेघपर (कच्छ) १५ मां पाटोत्स के अवसर पर पधारना।
१९	उनावा श्री स्वामिनारायण मंदिर के १९५ वे पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।
२०-२१	श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमका (मूली प्रदेश) विदशाब्दी महोत्सव के अवसर पर पधारना वहाँ से भुज (कच्छ) श्री नरनारायणदेव के २०३ वे पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।
२५-२६	श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपर (कच्छ) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।
२७	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर एकादशी को श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।
२९	श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) में पधारना।
३०	श्री स्वामिनारायण मंदिर कोडाय (कच्छ) १० वाँ पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अप्रैल-२०२६)



२	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु और सत्संग सभा के अवसर पर पधारना।
११	श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की मिटिंग अपने अध्यक्षता में पूर्ण किये। स्वामिनारायण म्युझियम।
१३	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर एकादशी के दिन श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।
१७-२०	श्री स्वामिनारायण मंदिर विल्सडनलेन, स्ट्रेधाम, ब्रोमली, स्टेनमोर अने लेस्टर (यु.के.) सत्संग सभा के अवसर पर पधारना।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से आशीर्वचन



श्री स्वामिनारायण मंदिर दियोदर (बनासकांठा), ता. १-३-२०२६ : दस दस वर्ष बीत गया । इस मंदिर को भगवान की कृपा से, समय कहाँ चला जाता है । इस क्षेत्र के प्रत्येक हरि भक्त ने जो सेवा दी है । वे सभी धन्यवाद के पात्र है । इस स्थान की कल्पना भी नही हो सकती है । पहलीबार जब महंत स्वामी ने मुझसे कहा कि अपने दियोदर के हरिभक्त - तो मैने कहा दियोदर कहाँ पर है ? यह सत्य बता रहा हूँ । इसके बाद ये दिलीपभाई ठक्कर बापा तथा अन्य हरिभक्तो से मिले । बातचीत हुई । मंदिर में भगवान को प्रतिष्ठित करने का उत्साह देखा । मंदिर होगा तो सत्संग होता है । हमारे छोटे-बड़े संस्कार अपने सिद्धान्त सुरक्षित रहेगे । बच्चे-बच्चियो की सुरक्षा रहे । अभी स्वामीने बात किया कि मंदिर क्यो होना चाहिए ? तो इसके लिये मंदिर की आवश्यकता होती है । यहाँ पर आप बैठे है । और विचार आते है । उसी तरह चाय के गल्ले पर । सभी जगह मानव होते है । इस सभी मानव को मंदिर मे खडी करे तो उनके विचार में कुछ परिवर्तन अवश्य आयेगा ? सभी को नही लेकिन महद अंश कुछ के विचार में बताया आयेगा । यह सीधी सी बात है । स्थान की महिमा विशेष होती है ।

अपने शास्त्रो में लिखा है कि आसन तथा मंत्र के माला को कभी बदलना नही चाहिए । जो वंश परम्परा से मिला है । कभी अपने वृद्धो से भी मिलता है । मंत्र, मंत्र केवल गुरुमंत्र ही नही लेकिन जो संस्कार हमे अपने पूर्वजो से मिला है । कुछ बात अपने जीवन में परिव्रतन ला देती है । पुनरार्तन सभी जगह पर होता है । श्रीमद् भागवत देखे तो, शिक्षापत्री या सत्संगिजीवन या कोई धार्मीक शास्त्र देखे तो उसमें पुनरावर्तन होता ही है । एक ही शास्त्र में भी रीपीटेशन होता है । जो पूर्वजो से संस्कार मिले है । माला-मंत्र और आसन - अर्थात् किस जगह पर बैठे । हमारे बैठने का जो वस्त्र होता है उसे ही आसन कहते है । पूर्वज जहाँ पर बैठकर पूजा किये है । वह स्थान पुराने समय में छोटे घर थे । अर्थात् मंदिर ताखा में रखा रहता था । अब बड़े मकान बन गये है । पुराने घरो के ताखा में मूर्ति रखी जाती थी । उसमे दीपक जलाने से उपर का लिख हो जाती थी । तथा फोटो झाँखा हो गया हो । फोटो झाँखा हो जाने से भगवान खो जाये ऐसा नही होता है । भगवान को सोना का नही बनाना है । यह स्थान परम्परागत रुप से मिला है । अपने पूर्वजो से प्राप्त माला को फेरने से विचारना समान बनते है । विचारो में सात्विकता आती है ।

पुराना मंदिर देखो । कई बार का अनुभव बता रहा हूँ । और कई जगह पर अनुबव कहता हूँ । आज बड़े बड़े मंदिर हो, अंदर आधुनिक व्यवस्था हो । अंदर जाने पर प्रकाश होता है । सीढी चढ जाये, ऐसे भी मंदिर होते है । लेकिन गाँव में पुराने छोटे २० X २० के मंदिर होत है । कई तो अपने झालावाड में है । अपने उत्तर गुजरात मे है । जो सुरक्षित है । वहाँ पर अंदर जाने पर अच्छा लगता है । यह आप के गाँव का मंदिर है । भगवान प्रस्थापित है । यह प्रत्यक्ष विराजमान है । पूर्वजो ने अधिक भजन गाये है । इस भजन के कारण धीरे-धीरे अपने में प्रभाव आता है ।

हम सभी तो भाग्यशाली है कि घर बैठे भगवान मिले है । इतना अच्छा मंदिर इसका दस वर्ष पूर्ण हो गाय । संकल्प किये थे । उनका १५ वर्ष पूरा हो गया । दिलीपभाई और हरिभक्तो ने अधिक धक्का खाया । यह गले से उतारे कि यह दियोदर क्या है ? बाद में अधिक संतोष मिला कि अब तो भाभर के अंदर भी सरस मंदिर बन रहा है । यहाँ के हरिभक्तो में उमंग और उत्साह है । मैने दिलीपभाई से कहा कि यहाँ से जो छोटा-बडा धर्मादा आता हो तो भी हम अहमदाबाद से सहयोग करेगे । अभी पाटण वाले भी आये थे । बोले शिलान्यास का

मूहुर्त बताये तथा तारीख भी दे। चारो तरफ की दिवाल गिर जा रही है। मैने कहा कि दिवाल तो अच्छी कर दो। दिवाल की शिलान्यास है कि मंदिर का शिलान्यास है ? यह हो जायेगा। चिंता नही करे। मैने दीलीपभाई से कहा है सभी मिलकर पूरा कर दो। जो हो सके उतना ही करना। हम सहयोग करेगे। भगवान बैठे है। आप लोग जो देव को धन देते है वही हम देते है। दियोदर के लिये भी चेक दिया था। रकम जो भी हो। मैने दिलीपभाई से कहा है कि मै हरिभक्तो को अपनी तरफ से संस्तति करुंगा दियोदर के हरिभक्त जो धर्मादा देते हो दियोदर मे मंदिर बन गया है। अब वे लोग भाभर के लिये सहयोग करे। यह हमारी विशेष आग्रह है। जो धर्मादा नही देते हो वही देगे। यह महाराज की आज्ञा है। धर्मादा नही देने वाले सेवा के रुप में दे। सेवा करने से ममत्व आता है। यह सरल बात है।

पहले किसी के पास पैसा नही था। अब पैसा आने पर थोडा-बहुत अपव्ययतो करेत है। जेब गरम रहने पर मगज भी गर्म रहता है। सबको नही होता है। जेब में धन न होने के कारण मनुष्य बैठ जाता है। क्या करे ? पहले के समय में पूरे गाँव में एक या दो आदमी ऐसे होते थे कि उसे दूसरा कहे कि इनका दिमाग खराब रहता है। अब तो पूरे गाँव में एक-दो होगे जिसका स्वभाव मृध होता है। आज कल लोगो का दिमाग अधिक गर्म रहता है क्यो कि जेब मे धन होता है। यह हास्य के लिये बता रहे है। वास्तव में क्या है ? पहले लोगो के पास घन नही था। तो समय देते थे। कालुपुर का मंदिर जब बन रहा था। तो कुछ लोग दो महीने का समय दिये थे। कोई ईटा पत्थर लेकर आते थे। कोई मिट्टी खोदने तो कोई लकडी की सेवा तथा लकडी खेत से लाते थे। कोई पथ्थर लाता था। राधाकृष्णदेव के सामने प्रसादी का खम्भा। इस खंम्भे का इतिहास संत बतायेगे। लगभग आप सभी को ज्ञात ही होगा। इन सेवा से अपनापन आता है। सेवा करने पर त्योहार के दिन पर मंदिर में आने का मन कहता है।

दिवाली आने पर किसी के साथ सम्बन्ध हो तो भी जाने का मन नही करता है ? भाईयो को अच्छा नही लगता है। बहनो के कहने पर जाना पडता है। मुह चढा के जाना ही पडता है। यह मेरा मजाक करने का स्वभाव है। थोडा सहारा करियेगा। यु-ट्यब में आयेगा। अधिक आयेगा। दूसरा क्या होगा ? महाराजने कहा, कृष्ण भगवानने कहा, सभी भगवान कहे है कि शत्रुभाव, दुश्मनभाव, मित्र भाव या अन्य भाव अन्त में तो स्वामिनारायण भगवान का नाम लेगे ? मै तो ऐसा मानता हूँ। हमे आनंद में रहना है। जीवन में मजा आता है। रेल की पटरी की तरह जीवन थोडा ही है। कि सीधे चले। उपर नीचे सबके जीवन में आता है। किसी दिन सब्जी में नमक कम होता है। किसी दिन बर्तन अधिक बजता है। सीधे में क्या आनंद मिलेगा ? कभी पकौडी चाहिए। कभी अचार चाहिए। सभी पापड चाहिए। आज लड्डू है ? है न। इस प्रकार अलग-अलग चाहिए। आप बैन्ड पार्टी को मत बुलाये। केवल मंजिरा वाले को बुलाये तो क्या होगा ? खराब लगेगा। तथा इसी जगह पर शहनाई, ढोल, मंजिरा बजे तो सब मिलकर अच्छी संगीत लगेगी। इस प्रकार जीवन में सभी रस हो तो जीवन नही तो जीवन नही है। मशाला बिना जीवन कैसा है। एक आदमी डॉक्टर के पास गया। बोला अधिक जीये उसके लिये कुछ करे। डॉक्टरने कहा, शराब पीते है ? ना, बीडी पीते है ? ना, फलाना करते है ? ना ! तो अधिक जीकर क्या करेगे ? यह तो परोक्ष जोक्स है। कही से सुना है। वास्तव में इसमे हमे कुछ करना ही हनी है। लेकिन सरलता से जीवन में सब कुछ मिल जाये। यह सम्भव नही है। सिद्धान्त रखने पर दुःख मिलता है। भगवान को मानना है तो परीक्षा आयेगी। क्योकि भगवान स्वयं परीक्षा दिये है। रामचंन्द्र भगवानने परीक्षा दिया था। वह भी एक घोबी के कारण। आप सोचे ! सीताजी का त्याग कर दिये। संसार में ऐसा ही होता है। वे तो भगवान थे। फिर भी एक धोबी अवरोध बना था। यह शास्त्र में लिखा है। इस लिये बता रहा हूँ। स्वामिनारायण भगवान के समय भी ऐसा था।

आज के समय में हम सभी भाग्यशाली है। भाभर मंदिर का द्वितीय मंजीला की छत पूर्ण हो गयी है। दियोदर के भक्तो से मेरा आग्रह है। इस मंदिर का सहयोग अवश्य करे। भाभर के हरिभक्तो मे उत्साह अधिक है। सभी से मिलने आये थे। आप लोगो का देव के प्रति, अपने सत्संग के प्रति ममत्व है। इस लिये कार्य होता है। २०२६ में किसी को किसी के लिये समय है। आज इतना समय निकालकर देव मंदिरो के लिये, अपने सत्संग के लिये तथा अपने परिवार के लिये कार्य करते है। आप सभी घन्यवाद के पात्र है। जो हरिभक्त, यजमान सेवा दिये है। तथा आमंत्रित मेहमानो भाईयो बहनो, बच्चे-बच्चियो का भगवान मंगल करे। ऐसे नरनारायदेव के चरणों प्रार्थना।

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (बापुनगर)

यु.के. विदेश सत्संग विचरण

- शास्त्री स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी (महंतश्री कांकरिया)



श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से अपने भविष्य के आचार्य महाराज १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा पूज्य गादीवालाश्री तथा पूज्यश्री राजा ता. १७-४-२०२६ के दिन सत्संग प्रचार के लिये यु.के. (ईग्लैन्ड) पधारे थे । साथ में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी तथा हजूरी पार्षद वनराज भगत पधारे थे । सबसे पहले विसल्डन मंदिर में सभा की गयी थी । इस में कई हरिभक्त पूज्य लालजी महाराजश्री तथा बहनो ने पूज्य गादीवालाश्री तथा पू.श्रीराजा के दर्शन आशीर्वाद का सुख प्राप्त किये ।

ता. १८-४-२०२६ को प्रातः हेरो मंदिर में हरिभक्तो के साथ शुभेच्छा मुलाकात तथा सत्संग सभा प्रबन्ध किया गया था । इस सभा में पूज्य महंत स्वामी शास्त्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, महंत स्वामी शास्त्री अभिषेकप्रसाददासजी, महंत स्वामी शास्त्री कुंजविहारीदासजी तथा स.गु. स्वामी माधवप्रसाददासजीने कथा-वार्ता प्रवचन का सुख दिये थे । पूज्य लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने सभा को प्रेमपूर्ण आशीर्वाद दिये ।

ता. १९-४-२०२६ अखात्रीज के शुभ दिन पर अपने आई.एस.एस.ओ. संस्था ने एक सुंदर नये मंदिर का निर्माण ब्रोमली में हो रहा है । उनके भूमि पूजन में पूज्य भावि आचार्य महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा अ.सौ. पूज्य गादीवालाश्री तथा पू.श्रीराजा के करकमलो द्वारा किया गया था । इसमें हजारो की संख्या में हरिभक्त पूजा में जुडे थे । साथ ही साथ ब्रोमली मंदिर की भूमि उपर श्री नर्मदेश्वर महादेव शिवलिंग की स्थापना की गयी थई । इस सभा में पूज्य महंत स्वामी कालुपुर तथा भूज मंदिर से पधारे पूज्य संत तथा महंत स्वामी (कांकरिया) ने सुंदर सत्संग करवाये थे । अंत में पूज्य लालजी महाराजश्रीने आशीर्वाद देते समय बताये कि इस ब्रोमली की भूमि पर अपने आई.एस.एस.ओ. संस्था का अधिक विशाल मंदिर का निर्माण कार्य अल्प समय में प्रारम्भ होगा । इससे लाखो हरिभक्तो को लाभ मिलेगा । मंदिर से जुडकर और अपनी नई पीढी में भी सनातन हिन्दूधर्म का सिंचन होगा । शायं को पूज्य श्रीराजा तथा पूज्य गादीवालाश्री के सानिध्य में महिला सत्संग सभा का प्रबन्ध किया गया था । इस में हजारो हरिभक्त लाभ लेकर जीवन को धन्य बनाई । उसी दिन शायं पूज्य लालजी महाराजश्रीने संतो के साथ वुलवीच मंदिर में दर्शन करके ठाकुरजी की आरती उतारे थे । वहाँ से स्ट्रेधाम मंदिर सत्संग सभा में पधारे थे । जहाँ पर हजारो भक्तोने आशीर्वाद एवम् दर्शन का लाभ उठाये थे ।

ता. २०-४-२०२६ के दिन पूज्य गादीवालाश्री तथा पू.श्रीराजा के सानिध्य में स्टेनमोर मंदिर के २० वे पाटोत्सव के उपलक्ष्य में बहनो की विशेष सभा शायं ३ से ६ बजे तक की गयी थी । और शायं ६ बजे के बाद पू. लालजी महाराजश्री संतो के साथ सभा में पधार कर ठाकुरजी की आरती उतारकर पूरी सभा को आशीर्वाद दिये थे ।

ता. २१-४-२०२६ के दिन धर्मकुल परिवार भारत जाने के लिये पूरे सत्संग से बिदाई लिये । इसके बाद पूज्य महंत स्वामी शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा महंत स्वामी शास्त्री अभिषेकप्रसाददासजी अपने क्रोली मंदिर में सत्संग विचरण हेतु पधारे थे । वहाँ तीन दिन की स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित धीरज आख्यान की कथा शास्त्री स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी व्यासने पूर्ण किया था । इस प्रकार अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से यू.के. में सत्संग की दिन-प्रतिदिन अधिक वृध्धि हो रही है । धर्मकुल की यह यात्रा प्रवास से सहाँ के सत्संग को अधिक प्रेरणा मिली है ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वारा से

सभी हरिभक्तो की सुविधा के लिये
प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के संकल्प से अब
श्री स्वामिनारायण म्युजियम के नये स्थापना दिन
हर वर्षे दि. २९ मार्च के दिन पर मनाया जायेगा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री यज्ञ की सूची - अप्रैल-२०२६

ता. २४-०४-२०२६ अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल – गांधीनगर – ह. प.भ. जगदीशभाई चीमनभाई पटेल, बिन्देश जगदीशभाई पटेल, धर्म बिन्देशभाई पटेल।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची - अप्रैल-२०२६

ता. ०५-०४-२०२६ प.भ.श्री कीरीटकुमार ईश्वरभाई पटेल – माणेकपुरवाला – गांधीनगर।
ता. १७-०४-२०२६ प.भ.श्री आकाशभाई भरतभाई गज्जर – गांधीनगर।
ता. १८-०४-२०२६ प.भ.श्री कपिलभाई चंदुभाई काचा (काचा टेलर्स) – राजकोट।
ता. १९-०४-२०२६ प.भ.श्री जीतुभाई तुलसीभाई टांक – जीरागढवाला – हाल अंधेरी मुंबई।
ता. २७-०४-२०२६ प.भ.श्री भूमिजा प्रियेन भुडिया – गाम सूरजपर हाल ओस्ट्रेलिया।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची - अप्रैल-२०२६

रू।. १५,००,०००/- प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल की खुशी के हेतु श्री स्वामिनारायण म्युझियम के १५ वे स्थापना दिवस के अवसर पर प्रसादी की वस्तु की सेवा मे – ह. प.भ. संजयभाई रमणभाई शंकरभाई पटेल, अ.सौ. मीनाबेन संजयभाई पटेल, प.भ. भाविक पटेल, अ.सौ. ऋतुबेन पटेल, आदर्श पटेल – उनावा (रामदास बापा परिवार – उनावा)

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदायમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલ:- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com



॥भक्तिसुधा॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "मन, कर्म बचन से किसी को दुःखी नही करे"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम लोग बार-बार यहाँ क्यो एकत्र होते है ? भगवान का संस्मरण स्थायी रहे और भगवान की प्राप्ति हो । इस लिये यह साधना करते है । हम कुछ साधना करते है तो कुछ शर्त रहती है । उसका पालन करने पर साधना सिद्ध होती है । इस प्रकार हम सभी मिलकर भगवान की प्राप्ति के लिये साधना कहते है । इसके लिये सब से बडी शर्त है । मन, कर्म, वचन की बात कथा में आयी । मन के बारे में क्या आया ? मन को अंकुश में रखकर भगवान मे लीलावृत्ति जोडकर रखे । और तीन प्रकार के कर्मो की बात आयी । पूर्व कर्म (प्रारब्ध) संचित और बिसामण धर्म बना रहे । भगवान की प्राप्ति हो, किसी को दुःख नही दे । ऐसा कर्म करे । ''वचन'' अर्थात् ऐसी वाणी में कहे सहज मे समझ आये । और किसी मन दुःखी नही हो । व्यवहार भी ऐसा करना चाहिए । सबको अच्छा लगे । आप इतना सत्संग करे । अधिक शास्त्रो को पढे । तब भी अच्छा व्यवहार नही करे तो अच्छी बात नही है । करियाणी के दुसरे वचनामृत में भगवानने शापित बुद्धि के विष यमें बात किये डॅ। महाराज ने कहा है कि निश्चित हो जाने के बाद दूसरी कोई कमी दिखे । उनकी चर्चा करना है । दो भक्त है । दोनो दृढ निश्चयी है । जीव अंतकरण तक इसके बाद एक को अभाव और अवगुण बना रहता है । और दूसरे के बाद कुछ नही जिसको अभाव बना रहता है । उसकी एक विशेषता है कि अभाव आने के बाद जन्म भी हो जाती है । महाराज ने पूछा कि इसका कारण क्या है । निश्चय के बाद अभाव का क्या कारण ? भगवदानंद स्वामीने उत्तर दिया कि : महाराज उसकी बुद्धि शापित कही जाती है । महाराज बोले सही उत्तर है । यह कभी बड़ी है । जिसका देह भाव टल गया हो मेरा, अपना मन समाप्त हो गया हो उसे यह कमी नही रहती है । शापित बुद्धि के तीन कारण है । (१) सच्चे संत को कष्ट दिया हो (२) गरीब असहाय को दुःखी किया हो । (३) माता-पिता की अवज्ञा करके दिल को दुःखी किया हो । इन तीन व्यक्ति के शाप से बुद्धि शापित हो जाती है । शाप मात्र बोलने से ही नही लगता है । किसी के मन से हाय भी लग जाती है । यह एक ऐसी कमी है कि इससे कल्याण रुक जाता है ।

इसके बाद भगवदानंद स्वामीने पूछा जो, ''हे महाराज ! उसकी शापित बुद्धि कैसे अच्छी होगी ? तब श्रीजी महाराजने कहा ''उनका तो ऐशा है । एक तो हम सिर पर दबे है और उसे दोना भी है । एक तो मोटा कपडा उसे धोनें समय लगता है । यहि पतला वस्त्र है तो साबुन लगाकर धोकर धवल कर सकते है । यदि मोटा कपडा धुलना है तो तीन-बार दिन उसे पानी में भिगोना पडता है । फिर गर्म करके साबुन लगाकर धोने पर स्वच्छ बनता है । इस प्रकार जिसकी कुबुद्धि शापित हो जाती है । वह सब कुछ रखता है । इतना रखता है कि दोष दूर नही होता है । दूसरो की तरह निकाली रहता है । निःस्वादी रहता है । निर्लोभी रहता है । निर्मानी रहती है । फिर भी उसे ऐसा नही रहा है । दूसरे से अधिक निष्कमी रहना चाहिए । दूसरा माला करे तो उसे और अधिक करना चाहिए । दूसरे से उठने से पूर्व उसे उठ जाना चाहिए । इन सब का पालन करने से शापित बुद्धि कम होगे । नही तो कम नही होगी ।

यहाँ पर महाराजने वचनामृत में बताये है कि शापित बुद्धि कैसे टलती है ? शमित बुद्धि होने के तीन कारण बताये है । हमे । इतना ध्यान देना है कि बुद्धि शापित ही न हो । किसी के दिल को दुःख नही दे । सब अपने आप अच्छा हो जायेगा । गणित के प्रश्न में उत्तर प्रश्न करना हो तो प्रारम्भ मे आंकडे सही लिखना चाहिए । आँकडा गलत लिखने पर उत्तर भी गलत आता है यहाँ पर कोई का दिल दुःखे नही यही उत्तम उपाय है । हमे यह सोचना है कि हम अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति जो पूरे सृष्टि के कर्ता है । उनके शरण में है । इसी प्रकार का कर्म भी करना है । स्थायी रुप से उनके शरण में रहे । और अंतकरण किस प्रकार शुद्ध रखे । यहाँ पर महाराजने कपडा को आग में उबालकर शुद्द करने की बात कहे है । अंतःकरण को शुद्ध करने के लिये आग में तपाते नही है । पानी मे भी धो नही सकते है । तो क्या करे ? जब भगवान की विरहयी अग्नि अंतर के मन को प्रज्वलित करे

तो भगवान के बिना रह नही सकते है। दूसरी बडी बात यह है कि अन्तरमन मे भगवान रुपी विरुद्ध की आग होगी तब किसी भी प्रकार का रखा द्वेष अभाव नही रहेगा । सभी साधन भगवान के लिये करे। इस प्रकार अंतकरण अपने आप स्वच्छ हो जायेगा। यहाँ पर पानी का अर्थ है कि ''आँसु'' भगवान के लिये होने से अन्त:करण शुद्ध होता है। मन, वचन कर्म से ऐशा रहे कि मंदिर में अभाव ही नही आये। क्योकि आदमी किस अवस्था में गुजर रहा है । बिना जाने उसके उपर दोष नही लगाना चाहिए। किसी का अवगुण ग्रहण नहीं करना चाहिए। किसी का दिल नही दुखाये। दूसरा कोई उपाय नही है। भगवान हम सभी को ऐसी शक्ति दे कि जो शरण मिला है वह कभी छूटे नही । यह भूमि भरतखंड के राजा की भूमि है । हम सभी भरतखंड के राजा नरनारायणदेव के शरण में है । यहाँ पर किसी प्रकार की रोक टोक नही है। यह उदाहरण है कि अपने नाथ कितने दयालु है। जिस प्रकार भजन करना ही करे। जहाँ पर बैठना हो बैठे। शर्त मात्र मर्यादा बनी रहे। आज्ञा में रहे। जो वस्तु सरलता से मिल जाती है। उसकी कीमत हम लोग कम करते तो सोचे हमे क्या मिला है। भगवान की मूर्ति में कितना तेज है कितना सुख है। जब यह लगता है कि मेरे पास कुछ नही, मेरा कोई नही, तब ये नरनारयणदेव और ये चौक याद कर लेना चाहिए। जितना चाहे उतनी शक्ति प्राप्त कर सकते है। ऐसा अनुभव हो जायेगा कि अनंतकोटि ब्रह्मांड के अधिपति, सर्व साक्षी, सर्वदृष्टा, सर्व नियंता, सर्व शक्तिमान ऐसे भगवान मेरा सब कुछ देने वाले है। मेरी चिंता और ध्यान देने वाले बैठे है।

●

प्रभु की सच्ची आवश्यकता

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

श्रीजी महाराजने दया करके यह दुर्लभ शरीर दिये है। अच्चे कुल में जन्म मिला है। भगवान तथा भगवान के संत पहचाने है। इस शरीर से प्रभु खुश हो जाये ऐसा कर लेना चाहिए। भगवान तथा संत के प्रिय हो जाये। यह अन्तिम जन्म हो ऐसा करे। गन्ने के उपर कई संस्कार करके गुड बना लेते है। उसी प्रकार यह मानव शरीर हम त्याग, तप, स्वधर्म के संस्कारो को जागृत करके भगवान को प्राप्त करले। सुख सत्संग से मिलता है। श्रद्धावान पुरुष हो सच्चे संत का साथ मिले तो धर्म, भक्ति, वैराग्य, विवेक आदि कल्याणकारी गुणो का उदय हो जाता है।

पूर्व के कई जन्मो का पुण्य उदय होता है तब ऐसा सत्संग का योग मिलता है। संयोग मिलने के बाद श्रध्धा और आवश्यकता मे कितनी वृद्धि होती है। उतना प्रभु के मार्ग मे प्रगति होती है। मृत्यु के बाद भगवान को प्राप्त करना है। यदि हमें लगाव नही होगा तो जीव वृद्धि नही करता है । महिमा समझे विना लगाव भी नही होता है। भगवान की पहचाने बिना उत्साह भी नही बढता है। आस्था भी नही वढती है। भगवान पुरुषोत्तम नारायण की महिमा तभी समझ सकते है। जब छोटे संतोने सत्संगी का दासनुदास का व्यवहार हो जाये।

प्रभु को प्राप्त करने की सच्ची आवश्यकता होती सत्संग की भीड सहन हो जाती है। रुकावट मे भी आराध्यदेव या गुरु में भाव बदलना नही है। सभी भगवद स्वीकार करना। ऐसा स्वभाव बन जाता है। इस प्रकार सत्संग में दासत्व का भाव आ जाता है।

एक बड़े साहब के यहाँ पर संत लोग पधारे थे। साहब भावपूर्वक संतो का सत्कार किये। वहाँ पर बुढियो नाम का एक सेवक था। साहब धरी बजावे। वह दोनो हाथ जोडकर जी हाँ कहकर नम्रभाव से खडा रहा। साहब के प्रति उसके मुख का और शरीर का हावभाव देखने पर ऐसा लगा जैसे वह मूर्तिमान निर्मानीपन बुढिया मे आ गया हो ? काम करने का उत्साह इतना था । संत आफिस से आकर बाहर पूछे भाई साहब आप को कितना वेतन देते है ? बुढियो ने कहा ५०० रुपया प्रति मास देते है। साहब बहुत अच्छे है। मेरा ध्यान रखते है। इसका उत्तर सुनकर सभी संत दिग्मूढ बन गये। यह दृश्य देख कर बड़े संतो ने छोटे संतो से बोले। देखा न ? यह उसकी कृतज्ञता देखो। इसके अलावा कुछ भी नही है। हम सभी को अब सोचना है। हमे तो प्रभु का धाम प्राप्त करना है। अपना ''जी हाँ'' की आवाज बेकार है ? तो अपने हृदय को देख लेना चाहिए।

पूर्व के भक्तो को भगवान को प्राप्त करने की कितनी आवश्यकता थी राज्य आदि का सुख-वैभव का त्याग करके पहाडो मे तपस्या किये थे। प्रभु को प्राप्त करने मे शारिरीक कष्ट की कोई चिंता नही थी। आत्म सुख में मस्त रहकर इन लोगो ने निश्चित तपस्या की होगी। जैसे कि ध्रुव – प्रहलाद – भतृहरि, मीराबाई, नरसिंह महेता आदि।

पूर्व के भक्त तो ठीक लेकिन प्रगट के भगवान के भक्तश्रध्धा और आवश्यकता मे क्या कम थे। डांगरवा के अगरोजी और अमराजी की क्या बात करे ? उन्हे ऐसा विचार

आया कि कई मुमुक्षु संसार छोडकर प्रभु को प्राप्त करने के लिये जाते है। सोचे अचानक महाराज का बुलावा अपने को आवे तो अपनी कैसी तैयारी है ? यह सोचकर दोनो भाई पीतल के पात निकालकर मिट्टी के बर्तन का प्रयोग करने लगे। राजसी प्रभाववाली वस्तुए। निकाल दिये। जब महाराज का बुलावा आया तुरंत मिट्टी के बर्तन को पैर से रौदकर रख दिये। प्रभु की भजन करने तथा त्यागी बनने के लिये निकल पडे। इस विषय में उनकी माँ ने कहा कि भगवान जैसे मेरे मालिक है। मेरी चिंता मत करना। चालो मै दोनो को गाँव के बाहर छोडने आयु। यह कोई छोटी बात नही है।

मांगरोल में आनंदजी संघेडिया को श्रीजी महाराजने कहा आपको पत्नी रखना हो तो हमे छोड दो। और हमें रखना है तो पत्नी को छोड दो। तब उसने कहा यदि मै पत्नी का त्याग करुगा तब रोटी कौन बनाकर देगा ? आप को छोड दे तो हमे मोक्ष कौन देगा ? महाराजने कहा आज से आप विमुख है। महाराजने गाँव के हरिभक्तो को सलाह दी आप सभी आनंदजी को मंदिर में मत आने देना। आवे तो कुत्ते की तरह भगा देना। यह बोलकर महाराज दूसरे गाँव मे चले गये.

आनंदजी ६ महीने तक मंदिर के बाहर बैठकर भजन किये। और हरिभक्तो के जूते को साफ करते थे। पुन: श्रीजी महाराज मांगरोल पधारे। यह दृश्य देककर महाराज अति खुश हुए। वह देखकर महाराज ने भक्त का आलिंगन किये। साधारण भक्त इस अवस्था में मंदिर जाना छोड देता है। मंदिर नही स्वभाव बदलता है। कल्याण की गणना रखना है। हृदय में ऐसी गांठ पडने पर ही प्रभु प्राप्त होगे।

गढपुर में दादा खाचर को घर कार्य के लिये आदमी की आवश्यकता थी। तभी महाराजने पहले काठिया से पूछे की कोई दादा खाचर का सेवक बनेगा ? तब वह बोला की मुझे खाना-पीना है। उनका सेवक तमो बने ? महाराजने कहा कि पर्वतभाई होते तो बन जाते। कुछ समय के बाद पर्वतभाई आये। महाराजने पूछा, आप दादा खाचर के सेवक बनेगे ? पर्वतभाई ने कहा हा, महाराज हम तो घर के सेवक ही तो है। इस में क्या ? महाराज पर्वतभाई के उपर खुश हुए। दूसरे से ऐसा कह भी नही सकते है। तो बनेगा कैसे ? इस लिये भगवान की प्राप्ति हेतु जिसका लगाव है। उससे दासानुदास होकर रहे।

करियाणी के मांचा भक्त तथा उनके मित्र भोजो चारण दोनो भगवान की खोज में निकले। दोनो ने यह शर्त रखा कि भगवान जिसे भी मिले वह दूसरे को अवश्य मिलायेगा। प्रथम रामानंद स्वामी को मिले। इसके बाद महाराज से मिले ? अर्थात् मांचा खाचरने भोजाभाई को बुला लिये। महाराज के दर्शन के लिये जाना था। बाहर निकला तो खेत देखा। खेत में कपास तैयार थी। मन मे आया कपास लेकर जाये। फिर विचार आना परम प्राप्ति मिलने वाली है। इसमें कपास रुकावट करेगी। इस कारण से घर वालो को बुलाकर बोले कि ४०० वीघा कपास तोड डालो। तभी घर वालो ने मना कर दिया। तब मांचा भक्त जो कहे है वह में कहता हूँ उसमे आप को क्या कष्ट है। फिर भी गाय-भैस-बकरी के धन को मिलाकर दोनो लोग श्रीजी महाराज के दर्शन हेतु गये। यह तो आवश्यकता की बात है। भगवत प्राप्ति का भाव उडे वह उत्तम भक्त कहा जाता है। जिन्हे यह संसार फंसा रखा है। वह तुच्छ पदार्थ का भी त्याग नही करता है। नासमझ भक्त केवल की मेड के लिये झगडते है। ऐसी समय सभी भक्तगण के हृदय में होनी चाहिए। मन की दालीया को पीछे करके सोचे की यह अन्तिम जन्म है। भगवान की प्राप्ति की आवश्यकता है। कही पर बंधे नही। बंधन की वृद्धि दबकर कही बधे नही।

●

प्रिय में प्रिय हो वह प्रदान करे

– कंचनबेन रणछोडभाई पटेल (नारणपुरा)

पंचाला के बगल में ओजत नदी के सामने वाले किनारे पर बालागाम नाम का एक छोटा सा गाँव है। भगवान श्री स्वामिनारायण ने पंचाला से बालागाम में पधारे थे।

इस गांव में एक वृद्ध मां रहती थई। वह कडिया-कुम्भहार जाति की थी। भगवान श्री स्वामिनारायण की अनन्य आश्रित थी। व्यवहार में साधारण थी। लेकिन स्वभाव से अति उदार थी।

वृद्ध मां शबरी की तरह महाराज के आने की प्रतिक्षा कर रही थी। गाँव में घर घर जाने के बाद भगवान श्री स्वामिनारायण वृद्धा माँ के घर आये।

महाराज के आने से वृद्धा मां हर्ष से भर गयी। उस को भावपूर्वक महाराज की पूजा की थी। वृद्ध माँ के अन्तर में आनंद का सागर उमड रहा था। उसके मन में यह हो रहा था। कि मैं महाराज के चरणो में क्या-क्या अर्पण करु। उसे यह समझ में आया कि आ जो ''महाराज माँगगे वह मैं प्रेम से दे दूँगी।

वृद्ध माँ भक्ति-भाव से पूर्ण हृदय से महाराज से बोली ''महाराज आप हमारे घर पर पधारे है। मुझे धन्य कर दिये। आप माँगे वह देने के लिये मैं तैयार हूँ।

भोला-भली वृद्ध माँ की बात सुनकर सभी लोग आश्चर्य चकित हो गये। सामान्य रुप से भगवान खुश होकर भक्त से पूछते है कि हे भक्त माँगो मैं तुम्हे वरदान देना चाहता हूँ।'' जब की आज गंगा उल्टी प्रवाहित हो रही थी। यहाँ व्यवहार में गरीब लेकिन भक्ति से पूर्ण वृद्ध माँ भगवान से कह रही थी। ''आप माँगे मै आप को दूँ?

वृद्ध माँ की बात सुकनर महाराज हँसे और बोले ''माँ! जो तुमको सबसे प्रिय हो वह मुझे दो।''

वृद्ध माँ के घर पर गाय बधी थी। वृद्धा को लगा ''यह गाय मुझे प्रिय है महाराज को दे देती हूँ। पुनः वृद्ध माँ को विचार आया कि ''महाराज ने तो प्यारी से भी प्यारी वस्तु माँगी है।'' घर के तिजोरी में धन पडा है। यह मुझे गाय से अधिक प्रिय है। यह धन में महाराज के चरणो में अर्पित कर देती हूँ।

इस प्रकार जब वृद्ध माँ के विचार में प्रिय से प्रिय वस्तु का विचार चल रहा था। वहाँ पर उसके दो प्रिय बच्चे ''महाराजजी घर पर पधारे है।'' यह सुकनर दौडते हुए घर पर आये। उनका नाम देवजी और प्रेमजी था।

बच्चो को देखते ही वृद्ध माँ को लगा कि ''अरे ये दोनो पुत्र मुझे प्रिय में भी प्रिय है। इस लिये इन दो बच्चो को महाराज को अर्पण कर दूँ।''

उसने बच्चो से कहा कि ''बच्चो! महाराज ने हम से प्यारे से भी प्यारा वस्तु माँगा है। इस संसार में तुम लोगो से अधिक प्यारा कोई मेरा नही है। तुम दोनो मेरी जीवन से अधिक प्यारे हो। मैं तुमको महाराज की सेवा में अर्पण करना चाहती हूँ।

शेर के तो शेर होते है। ये संस्कारी माँ के बच्चे संस्कारी ही होते है। दोनो बच्चे खुश होकर बोले ''माँ! इसमें पूछना क्या है? संसार के मध्य फँसने से अच्छा है कि महाराज की सेवा मे लग जाना है। इसमें गलत क्या है?

वृद्धा माँ बच्चो की बात सुकनर अतिशय खुश हुई। दोनो बेटो का हाथ महाराज के हाथ में देकर बोली कि ''महाराज! यह मेरी प्रिय से भी प्रिय वस्तु अर्पण कर रही हूँ।''

आस-पास के भक्तगण वृद्धा माँ का यह समर्पण देखकर आश्चर्य चकित हो गये। वृद्धा माँके द्वारा दिया गया बच्चे का प्रकरण सम्प्रदाय के इतिहास में स्वर्ण अक्षर से लिखा जाता है।

भगवान श्री स्वामिनारायणने दोनो बच्चो को साधु बनाया। देवजी का नाम ''दहरानंद स्वामी'' तथा प्रेमजी का नाम ''प्रसादानंद स्वामी'' रखे थे। ये प्रसादानंद स्वामी अन्तिम तक अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के सहारे रहे। आज भी उनेक नाम का प्रसादी प्रतीक अहमदाबाद मंदिर में है।

भगवान श्री स्वामिनारायण के संत-मंडल में इन दो संतो का नाम उच्च स्थान पर है।

●

काला पहाड - घोर जंगल

– लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, ता. कडी)

बद्रिका आश्रम से आगे चलते चलते शायंकाल हो गया था। घोर जंगल था ऊँचा पर्वत था। इस पर्वत के नजदीक मोटे उत्तम्भ वाला छायेदार वट वृक्ष है। इसके नीचे राक्षस का निवस है। भूत उसके साथ रहते है। धनघोर अंधेरी रात है। भयंकर आवाज आ रही है। जो यक्ष, राक्षस और राक्षसियों की आवाज है। कई जगह पर धडाके हो रहे है। बिजली चमक रही है। इस अल्प प्रकाश में वर्णीराज को कुछ कुछ दिखाई दे रहा है। कुछ समय के बाद राक्षस-राक्षसियाँ तथा उनके अनुचर अपना भोजन करके आ गये थे। वे मुझ मे पशु-पक्षी लाये है। वर्णिराज यह दृश्य देखते है। धैर्यवाले वर्णीराज जरा सा भी डरते नही है। राक्षस तथा राक्षसियाँ आवाज लगाकर बोले। आओ बटूक को खा जाओ। राक्षस चिल्लाने लगे। तथा बटुक के पास आ गये। वर्णीराज ने हनुमानजी को याद किया तो हनुमान महाराज तुरंत पधारे। पूँछ को बडी बनाकर सभी को घेर दिये। इसके बाद वह बरगद के सबसे ऊँची डाली पर चढकर कितने के सिर को पहाड पर दे मारे। कुछ को वृक्ष के साथ लडा दिये। लोगो के मुँह से रक्त बाहर आने लगा। सबकी करुण आवाज सुनकर वर्णीराजने सहज हनुमानजी को संकेत किये। ''क्षमावीरस्य भूषणम्'' वीर का आभूषण क्षमा है।'' थोडा प्रसाद तो देने दे ठीक से ले। श्रीहरि की आज्ञा से सभी को छोड दिये।

"पापी कृष्णे पीडवा आव्यो, हनुमाने मारी नसाड्य,
वीती रात दिवस थयो त्यारे हनुमान फल लाव्या"
त्यारे

इस प्रकार हनुमानजी ने राक्षस-राक्षसियो का पराभव करके महाराज के लिये स्वादिष्ट फल लाकर खिलाये।

सत्संग समाचार

विश्वका सर्व प्रथम कालुपुर मंदिर में अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव जयंती फूल दोलोत्सव

फाल्गुन सुद-१ ता. ४-३-२०२६ श्री नरनारायणदेव जयंती-फूल दोलोत्सव श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परम्परागत रुप से मनाया गया।

दोपहर १२ बजे अपने भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव की प्रगटोत्सव की आरती उतार कर श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल ने अबील-गुलाल के सुंदर रंगो से भीगकर प्रसादी के चौक में सुंदर सामियाने में केसुडा के रंग द्वारा पिंचकारी से एक घंटे तक हरिभक्तो को गीला किये। इस अलौकिक दर्शन के लिये हरिभक्तो मे पडा-पड़ी थी। पत्रिका आमंत्रण के बिना हजारो भक्तो की भीड देखकर ऐसा लगा कि श्री नरनारायणदेव प्रत्यक्ष यहाँ पर उपस्थित हो। प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री और पू.श्रीराजा भी बहनो को दर्शन देने हेतु पधारी थी। महंत स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजीने सुंदर प्रबंध किया था।

(कोठारी स्वामी)

विश्व का सर्व प्रथम कालुपुर मंदिर में चैत्री समैयो श्री रामनवमी श्रीहरि २४५ वाँ प्रगटचोत्सव अखंड धून

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. स्वा. पुरुषोतमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन प्रेरणा से विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में चैत्र सुद-९ ता. २७-३-२०२६ शुक्रवार श्रीरामनवमी श्रीहरि २४५ वाँ प्रगटोत्सव-अखंड धुन बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक आदि उल्लास पूर्वक मनाया गया।

प्रातः ६ से शायं ६ बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुन प्रसादी के सभा मंडप में शुरु हुआ। प.पू. बड़े महाराजश्री भी धुन मे आये थे। संत-हरिभक्तो से मंडप भर गया था। आज अक्षरभवन में बिराजमान बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव महाभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो से वेदोक्त विधि से पूर्ण किया गया था। अन्नकूट आरती प.पू. बड़े महाराजश्री उतारे थे। परमकृपालु श्री नरनारायणादि देव को हरे द्राक्ष का अलौकिक अन्नकूट दर्शन हजारो हरिभक्तोने किया था।

दोपहर १२ बजे मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचंद्रजी भगवान की जन्मोत्सव आरती की गयी। धुन तथा समैया में आये हरिभक्तो का तरबूच खिलाया गया था। तथा नीबू पानी भी था। शायं ६ बजे महंत स्वामी और यजमान हरिभक्तोने पूर्णाहुति की आरती किये थे। आज सभी हरिभक्तो के लिये फलाहार की व्यवस्था की गयी थी। सेवा देने वाले हरिभक्तो को धन्यवाद दिया जाये वह उनके लिये कम है। ७ से १० बजे तक प्रसादी के चौक में अपने सत्संगी कलाकार सम्प्रदाय की मर्यादा में रहकर रास-गरबा किये थे। रात में १० बजकर १० मिनिट पर श्रीहरि प्रगटोत्सव की आरती प.पू. लालजी महराजश्रीने की थी। यह दर्शन दिव्य था। हजारो संत-हरिभक्त प्रगटोत्सव की आरती दर्शन किये। साथ में पंजीरी का प्रसाद भी लिये थे। पू. महंत स्वामी के संत मंडलने अच्छी व्यवस्था दी थी।

आज के दिव्य अवसर के यशस्वी यजमानश्री

(१) बालस्वरूप श्री घनश्याम महाराज का ७३ वाँ पाटोत्सव के यजमानश्री : प.भ.अ.नि. राजाभाई कनुभाई झवेरी (जामनगरवाले), अ.नि. रसिकलाल राजाभाई झवेरी (अमदावाद) ● अ.नि. घनश्यामभाई राजाभाई झवेरी (मुंबई), प.भ. नवीनभाई राजाभाई झवेरी (राजकोट), प.भ. विजयभाई राजाभाई झवेरी (अमदावाद) - ह. जीतेन्द्र रसिकभाई झवेरी, जे.पी. रसिकभाई झवेरी, चेतन घनश्यामभाई झवेरी, सुनिल घनश्यामभाई झवेरी, अनिल नवीनभाई झवेरी, मितेन घनश्यामभाई झवेरी, बीरजु विजयभाई झवेरी, जय नवीनभाई झवेरी

(२) अखंड महामंत्र धून के यजमानश्री : प.भ.अ.नि. गुरूजी नाथजीभाई ईच्छाराम शुक्ल - ह. भास्करभाई ● अ.नि. पटेल बाबुलाल अंबालाल साकरचंद (मोखासणवाला) (गल्लापेटी समिति) ● अ.नि.

अंबालाल नाथाभाई पटेल (मुखी परिवार - झुंडाल) ● अ.नि. बाबुभाई मणीलाल शाह (प्रांतिजवाळा) - ह. अ.नि. शरदभाई, अश्विनभाई, भरतभाई, कमलेशभाई.

(३) श्रीहरि के २४५ वे प्रागट्योत्सव की आरती के यजमानश्री : श्री नरनारायणदेव के पूजारी के हेतरूचीवाले सभी हरिभक्तो। (कोठारी स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर दियोदर दशाब्दी महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अ.नि. स.गु. शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी की दिव्य प्रेरणा से एवम् स.गु. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर दियोदर का दशाब्दी पाटोत्सव ता. २५-२-२०२६ से १-३-२०२६ तक भव्यता से मनाई गई।

इस अवसर के उपलक्ष्य में श्रीरामचरित्र मानस की पाँच दिन का पारायण स.गु. शा. स्वा. सत्यसंकल्पदासजी (महंतश्री नारणघाट) के वक्ता पद से हुई। शाकोत्सव का भव्य आयोजन किया गया था।

ता. १-३-२०२६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत-पार्षद मंडल के साथ पधारे थे। आप ने ठाकुरजी की आरती उतारे थी। सभी हरिबक्तो को सभा में आशीर्वाद दिये थे। अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, जे.पी. स्वामी आदि संत पधारे थे। यहाँ के यजमान विशेष कार्यक्रम का यजमान बनकर सेवा का लाभ लिये थे।

(जे.पी. स्वामी - भंडारी स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ गांधीनगर मातृ वंदना महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू. लालजी महाराजश्री के मार्गदर्शन से तथा कोठारी शा. भक्तिजीवन स्वामी के प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ गांधीनगर में श्री नरनारायणदेव बाल मंडल द्वारा ता. १३-२-२०२६ को मातृ-पितृ वंदना कार्यक्रम के द्वारा मातापिता का भाव पूजा का सुंदर प्रबन्ध तथा बच्चो द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम दिये गये थे। संतो के प्रवचन के साथ अंतर भाव के साथ बालको ने माता-पिता की पूजा किये थे। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये बाल सभा के संचालक श्री माधुभाई, श्री घनश्यामभाई तथा मुकेशबाई ने बालको के लिये इनाम वितरण तथा प्रसाद की सुंदर व्यवस्था किये थे। (कोठारीश्री गांधीनगर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोली का ३७ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से ता. ५-४-२०२६ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल मे विराजमान देवो का ३७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया। इस में जेतलपुरधाम से स.गु. ब्र.शा. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी (ट्रस्टीश्री-कालुपुर), स.गु. शा. स्वामी चंद्रप्रकाशदासजी, स.गु. ब्र. के.पी. स्वामी, अक्षर स्वामी, भक्तिकेशव स्वामी, जनमंगल स्वामी आदि संत पधारकर सत्संग कथा-वार्ता का लाभ दिये थे। अन्नकूट का दर्शन करके लोग खुश हुए।

(जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पालडी-कांकज

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से ता. १०-४-२०२६ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर पालडी-कांकज में विराजमान देवो का २० वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया। जिस में जेतलपुरधाम से स.गु. शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी (महंतश्री एप्रोच), स.गु. ब्र. के.पी. स्वामी, अखंड स्वामी, जनमंगल स्वामी आदि संत पधारकर सत्संग कथा-वार्ता का लाभ दिये थे। अभिषेक और अन्नकूट का दर्शन करके लोग खुश हुए।

(जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोली का ३७ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी

पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से ता. ५-४-२०२६ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल मे विराजमान देवो का ३७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया। इस में जेतलपुरधाम से स.गु. ब्र.शा. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी (ट्रस्टीश्री-कालुपुर), स.गु. शा. स्वामी चंद्रप्रकाशदासजी, स.गु. ब्र. के.पी. स्वामी, अक्षर स्वामी, भक्तिकेशव स्वामी, जनमंगल स्वामी आदि संत पधारकर सत्संग कथा-वार्ता का लाभ दिये थे। अन्नकूट का दर्शन करके लोग खुश हुए।

(जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटण का प्रथम पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटण में बिराजमान देवो का प्रथम वार्षिक पाटोत्सव ता. १५-४-२०२६ के दिन उल्लास पूर्वक मनाया गया। इस में जेतलपुरधाम से स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, स.गु.शा. स्वा. नारायणप्रसाददासजी, स.गु. शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी (महंतश्री बावला), शा. स्वा. चंद्रप्रकाशदासजी, पूजारी स्वामी व्रजविहारी स्वामी आदि संत पधारक सत्संग कथा-वार्ता का लाभ दिये थे। गाँव के सभी हरिभक्त प्रथम वार्षिक पाटोत्सव मे भाग लिये थे। महिला मंडल अपने घर से अन्नकूट के लिये भोज्य पदार्थ लायी थी। तथा घनश्याम महाराज की कृपा प्राप्त की।

(जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर खेरोल अखंड महामंत्र धून

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर खेरोल (प्रांतिज) में श्रीरामनवमी - श्रीहरि प्रागट्योत्सव के समय गाँव के सभी हरिभक्त समूह में श्री स्वामिनारायण महामंत्र का १२ घंटे तक अखंड धुन गाये थे। यहाँ के सभी हरिभक्त सत्संग में अच्छी प्रवृत्ति करते है। (कोठारीश्री खेरोल मंदिर)

सर्वोपरीधाम छपैया मंदिर में श्री रामनवमी - श्रीहरि प्रगटोत्सव

सम्प्रदाय का विश्व मे महाअलौकिक तीर्थधाम छपैया श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध पू. स्वामी श्री जगतप्रसाददासजी की प्रेरणा से तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रसाददासजी के अच्छे मार्गदर्शन मे सम्प्रदाय के सर्वोपरीधाम छपैयापुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में चैत्र सुद-९ श्री रामनवमी श्री बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज का प्रगटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया। वहाँ के स्थानीय भक्त और यात्री तथा संत ने श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून, भजन, कीर्तन, करके दोपहर १२ बजे श्री राम जन्मोत्सव आरती ठाकुरजी के लिये अन्नकूट भोग का उत्तम व्यवस्था थी। रात्रि १० बजकर १० मिनट पर श्री घनश्याम महाराज की प्रगटोत्सव आरती की गयी। छपैयाधाम में भगवान श्रीहरि का प्रागट्य हुआ। वैसा दिव्य वातावरण रामनवमी के दिन छाया था।

वर्तमान में छपैया धाम में पिछले तीन वर्ष से महाभगीरथ निर्माण कार्य प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सीधे देख रेख में चल रहा है। यह भी दर्शन योग्य है।

(विष्णु स्वामी - छपैयाधाम)

अयोध्या श्री स्वामिनारायण मंदिर श्री रामनवमी-श्रीहरि प्रगटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् धर्मकुल के आशीर्वाद से अयोध्या मंदिर के महंत स.गु.शा. स्वामीश्री नारायणवल्लभदासजी (वडनगर-महंतश्री) के मार्गदर्शन मे चैत्र सुद-९ ता. २७-३-२०२६ को श्रीरामनवमी-श्री घनश्याम महाराज के प्रगटोत्सव दिवस पर श्री स्वामिनारायण मंदिर अयोध्या में प्रातः से रात तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन-भजन-कीर्तन दोपहर १२ बजे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी भगवान का प्रगटोत्सव की आरती की गयी। यहाँ के स्थानीय एवम् यात्रियोने इस अवसर का लाभ लिया। रात १०-१० मिनट पर सर्वोपरी श्री घनश्याम महाराज का प्रगटोत्सव आरती की गयी। सभी भक्तो को पंजीरी का प्रसाद दिया गया था।

(कोठारी स्वामी - अयोध्या)

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर श्री रामनवमी श्रीहरि प्रगटोत्सव को मनाना

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् धर्मकुल की कृपा से तथा स.गु. महंत स्वामी नित्यप्रकाशदासजी की

प्रेरणा और सुरेन्द्रनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में चैत्र सुद-९ ता. २७-३-२०२६ श्रीरामनवमी - श्रीहरि प्रगटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया था । प्रातः ९ से १२ श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून, दोपहर १२ बजे श्री रामचंद्रजी भगवान की प्रगटोत्सव की आरती शायं ५-३० से ७-३० शहर के मुख्य मार्गो के उपर सजे ट्रैक्टर, बैन्ड पार्टी के साथ भव्य शोभायात्रा, धुन, भजन, कीर्तन करते निकले थे । रात्रि १०-१० मिनट पर भगवान श्री बालस्वरुप घनश्याम महाराज का प्रगटोत्सव मनाया गया था ।

इस अवसर पर मूली मंदिर से महंत स्वामी कृष्णवल्लभदासजी, शा. स्वा. सत्संगसागरदासजी और पार्षद कनु भगत और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने प्रेरक सेवा दी थी। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हलवद (टावरवाला) का १८० वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् धर्मकुल के आशीर्वाद से मूली प्रदेश का श्री स्वामिनारायण मंदिर हलवद (जूना टावरवाला) का १८० वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया । इस अवसर पर ता. २२-३-२०२६ से ता. २६-३-२०२६ को शिक्षापत्री भाष्य पाँच दिन पारायण शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी, शा. स्वा. विश्वविहारीदासजी ने सम्भाला था । धामोधाम से संत पधारे थे । ठाकुरजी की सुदंर अन्नकूट आरती की गयी थी । इस अवसर पर शाकोत्सव का आयोजन था । हलवद तथा आस-पास हरिभक्तोने लाभ लिया था ।

(अनिलभाई दूधरेजिया - ध्रांगध्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ध्रांगध्रा (बहनो का) ६ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से ध्रांगध्रा बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर का ६ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया । पाटोत्सव के अवसर पर यज्ञ, अखंड ६ घंटे की महामंत्र धून, ठाकुरजी की अन्नकूट और सांख्ययोगी कंचनबा, सांख्ययोगी भगवतीबा और सांख्ययोगी हिराबाने बहनो को कथा-वार्ता का लाभ दी थी । हलवद से शा. भक्तिनंदनदासजी संत-मंडल के साथ पधारकर कथा-वार्ता का लाभ दिये थे ।

(अनिलभाई दूधरेजिया - ध्रांगध्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बद्रीनाथधाम दर्शन के लिये आनेवाले यात्रिको को नम्र निवेदन

श्री बद्रीविशाल भगवान का दर्शन वैशाख सुद-७ ता. २३-४-२०२६ गुरुवार से प्रारम्भ हो चुका है । यहाँ पर दर्शन हेतु आनेवाले यात्रियो से नम्र आग्रह है कि ठहरने तथा भोजन प्रसाद के लिये । नीचे दिये गये मोबाईल नम्बर पर (व्यवस्था के भाग रुप मे) अग्रम जानकारी देने का कष्ट करे ।

मो. नं. ९४२६९ ४४७४७, ९४१२९ ६५१६८

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE - KALUPUR

Information for foregin donation towards Shree Narnarayan Mandir Trust for all Satsangi, who are belongs to abroad (out side India) remit their donation to Shree Narnarayan Mandir Trust, Kalupur, Ahmedabad. Only in Our FCRA A/c. Details as under.

BANK NAME	:	**STATE BANK OF INDIA**
BRANCH	:	**FCRA CELL, MAIN BRANCH, SANSAD MARG, NEW DELHI-110001**
BENEFICIARY NAME	:	**SHREE NARNARAYAN MANDIR TRUST**
SAVING BANK A/C. NO.	:	**401 890 15898**
IFS CODE	:	**SBIN0000691**
SWIFT CODE	:	**SBININBB104**
BENEFICIARY ADDREES	:	**SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE, KALUPUR, AHMEDABAD, GUJARAT, INDIA**

Special instruction for remittance made through NRE Cheque in Indian Rs.-

If any donation route from abroad to NRE A/c in India (of Donor), please donate with your cheque along with copy of passport of related donor, Only afterwards their donation will be credited in above mentioned A/c only.

अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में अधिक मास प्रथम ज्येष्ठ मास (पुरुषोत्तममास) की भव्य तैयारी से मनाना

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्रीजी महाराजने स्वयं अपने हाथो में लेकर प्रतिष्ठित श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में सं. २०८२ के पवित्र अधिक ज्येष्ठ मास (पुरुषोत्तम मास) में आने वाले पूरे मास के उत्सव विधि के प्रमाण से भव्यता से मनाने का आयोजन किया गया है। इस प्रसंग पर प्रतिदिनके वार्षिक व्रत-उत्सव के प्रसंगो के दर्शन का लाभ लेने हेतु हमारे सभी सत्संग समाज का प्रिय आमंत्रण है।

तिथि	तारीख	उत्सव	समय	रकम
जेठ सुद-१ रविवार	१७-५-२०२६	ग्वालबाल दर्शन	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-२ सोमवार	१८-५-२०२६	रथयात्रा	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-३ मंगलवार	१९-५-२०२६	श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव	६-३० सवारे अभिषेक	-
जेठ सुद-४ बुधवार	२०-५-२०२६	गणेश पूजन	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-५ गुरुवार	२१-५-२०२६	शिक्षापत्री जयंती-वसंत पंचमी	८-०५ सवारे	११०००/
		हवेली श्रीघनश्याम महाराज का पाटोत्सव	६-३० सवारे अभिषेक	७१०००/-
जेठ सुद-६/७ शुक्रवार	२२-५-२०२६	शाकोत्सव दर्शन	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-८ शनिवार	२३-५-२०२६	राधाष्टमी	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-९ रविवार	२४-५-२०२६	बालस्वरूप श्रीघनश्याम महाराज का	६-३० सवारे अभिषेक	७१०००/-
		पाटोत्सव, रामनवमी, श्रीहरि जयंति	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-१० सोमवार	२५-५-२०२६	दशेरा (पूजन)	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-११ मंगलवार	२६-५-२०२६	तुलसी विवाह	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-११ बुधवार	२७-५-२०२६	हाटडी	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-१२ गुरुवार	२८-५-२०२६	रंगमहोल घनश्याम	६-३० सवारे अभिषेक	७१०००/-
		महाराज का पाटोत्सव, वामन जयंती,	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-१३ शुक्रवार	२९-५-२०२६	साटे का मनोरथ	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-१४ शनिवार	३०-५-२०२६	नृसिंह जयंती	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-१५ रविवार	३१-५-२०२६	केशर स्नान	६-३० सवारे	-
जेठ वद-१ सोमवार	१-६-२०२६	पुष्पदोलोत्सव नरनारायणदेव जयंती	८-०५ सवारे	२१०००/-
जेठ वद-२ मंगलवार	२-६-२०२६	हिंडोला सुकोमेवो	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-३ बुधवार	३-६-२०२६	हिंडोला फ्रूट	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-४ गुरुवार	४-६-२०२६	हिंडोला आम्रकुंज	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-५ शुक्रवार	५-६-२०२६	हिंडोला गीरी कंदरा	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-६ शनिवार	६-६-२०२६	हिंडोला सावन भादो	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-७ रविवार	७-६-२०२६	कुंजगली	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-८ सोमवार	८-६-२०२६	जन्माष्टमी	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-९ मंगलवार	९-६-२०२६	नंद महोत्सव	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-१० बुधवार	१०-६-२०२६	हिमालय दर्शन	८-०५ सवारे	२१०००/-
जेठ वद-११ गुरुवार	११-६-२०२६	हिमालय दर्शन	८-०५ सवार	२१०००/-
जेठ वद-१२ शुक्रवार	१२-६-२०२६	वनविचरण	८-०५ सवारे	२१०००/-
जेठ वद-१३ शनिवार	१३-६-२०२६	लक्ष्मीपूजन, धनतेरस	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-१४ रविवार	१४-६-२०२६	श्री हनुमानजीनुं पूजन	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-३०/१ सोमवार	१५-६-२०२६	अन्नकूट गोवर्धन पूजा	७-३० सवारे	११०००/-
		श्री नरनारायणदेव	९-०० सवारे	७१०००/-
		श्री राधाकृष्णदेव	९-०० सवारे	७१०००/-
		श्रीधर्मदेव भक्तिमाता हरिकृष्णमहाराज	९-०० सवारे	७१०००/-

प्रिय हरिभक्तो यह पवित्र अधिक पुरुषोत्तम मास प्रतितीन वर्ष के बाद आता है। इस कारण से इसमें यजमान बनने का सभी का मन होता है। इस लिये आप सभी समय से कोटार मे अपने यजमान पद हेतु नाम लिखवा दे। इसमें नाम-पता भी लिखवाये। तथा जिस उत्सव प्रसंग मे लाभ लेना चाहते है उसमं भी निश्चित रुप से नामांकन करवाले।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१ ली. महंत स्वामी शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी

चंपकभाई : 80002 96429 ● हार्दिक : 77790 52048

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

मागसर सुद-१ प.भ.अ.नि. जयाबेन जयंतिलाल सोनी (अहमदाबाद), प.भ. मिन्टुकुमार भरतभाई (महेलाव) । **मागसर सुद-२** प.भ. सिध्धार्थ भावेशभाई चोडवडीया (अहमदाबाद), प.भ. अशोकभाई दवे साहेब (जजश्री) (अहमदाबाद) । **मागसर सुद-३** प.भ. सुशीलाबेन रमेशभाई पटेल (विहार), प.भ. डॉ. चिंतनभाई के. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. कीर्तिकुमार घनश्यामभाई पटेल (हांसोल), प.भ. भार्गव विनोदकुमार राठोड (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. दिनेशकुमार केशवलाल महेता (अहमदाबाद), प.भ. ध्रुव दलसुखभाई पटेल (अहमदाबाद) । **मागसर सुद-४** प.भ.अ.नि. कोकिलाबेन ठाकोरभाई पटेल (बोडेली), प.भ. जयेशभाई प्रभुदास पटेल (गोरज), अ.नि. सांख्ययोगी झवेरबा (झुंडाल), प.भ. पंकजभाई सोनी (अहमदाबाद) । **मागसर सुद-५** प.भ.अ.नि. पुरबाई मावजी हालाई (नारणपर-कच्छ) । **मागसर सुद-६** स.गु. शा. स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी (कांकरिया-महंतश्री), प.भ. पल्लवीबेन भरतकुमार शाह (अहमदाबाद), प.भ. प्रफुलभाई परसोतमभाई पटेल (बाकरोल), प.भ. वालबाई परबत भुडीया (मानकुवा-कच्छ) । **मागसर सुद-७** प.भ. किनल जतीनभाई कुंभाणी (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. लवजीभाई जादवभाई सुतरीया (सुरत), प.भ. खीमजी रामजी भुडीया (दहींसरा-कच्छ), प.भ. प्रेमजी देवजी आसाणी (भुज-कच्छ), प.भ. समराथाजी रमाजी चौधरी (निकोल) । **मागसर सुद-८** प.भ.अ.नि. लक्ष्मण शिवजी हिराणी (मिरजापर-कच्छ) । **मागसर सुद-९** प.भ. अमृतबेन मनजी भुडीया (फोटडी-कच्छ), प.भ. तीर्थ निमेषभाई पटेल (अहमदाबाद), सांख्ययोगी मानबाई धनजी (कच्छ-भुज) । **मागसर सुद-१०** प.भ. मनोजभाई गोरधनभाई (अहमदाबाद), प.भ. दिपक आर्यन महेता (अहमदाबाद), प.भ. अनिलभाई नरसिंहभाई सभाणी (अहमदाबाद), प.भ. सोनलबेन शैलषभाई पूजारा (अहमदाबाद), प.भ. यश मुकेशकुमार भावसार (अहमदाबाद), प.भ. निलेशभाई रमेशभाई मारफतीया (अहमदाबाद), प.भ. मानसीबेन पूजनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. चि. नेहा चि. विकेशना लग्न प्रसंगे (बोल्टन), प.भ. मनजी शामजी केराई (गोडपर-कच्छ) । **मागसर सुद-११** प.भ.अ.नि. वालजी रवजी केराई (कोडकी-कच्छ), प.भ. प्रियंकाबेन विपुलभाई जोगाणी (सुरत), प.भ.अ.नि. नीलाबेन रजनीभाई महेता (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. वेलबाई लालजी पिंडोरीया (नारणपर-कच्छ), प.भ. कैलाशबेन रमेशचंद्र (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. अतुलभाई लालजीभाई नाकराणी (निकोल), श्री नरनारायण ईन्फ्रास्ट्रकचर प्रा.ली. (गांधीनगर) । **मागसर सुद-१२** प.भ. भूपेन्द्रभाई पटेल (बामणगाम), प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ.अ.नि. जादवजीभाई करशन भूडीया (फोटडी-कच्छ), प.भ. चिरागभाई प्रकाश मीराणी (मुंबई), प.भ. विराज दिनेशभाई पटेल (झुंडाल), प.भ. दिनेशभाई मरघाभाई पटेल (झुंडाल), प.भ. मनसुखभाई केशवलाल पटेल । **मागसर सुद-१३** प.भ.अ.नि. जनार्दन वसंतलाल दोशी (वडोदरा), प.भ. किरणभाई अरविंदलाल पटेल (करजीसण), प.भ.अ.नि. वालजी रवजी केराई (कोडकी-कच्छ), प.भ. शिखा अल्पेश पिंडोरीया (सरली-कच्छ), प.भ. नारण प्रेमजी केराई (भुज-कच्छ), प.भ. मयंकभाई कामदार (पोरबंदर), लीलानंद मेग्नेशियम । **मागसर सुद-१४/१५** प.भ. मेहुल जगदीशभाई ठक्कर (मुंबई) ।

मागसर वद-१ प.भ. प्रिया अल्पेश पिंडोरीया (सरली-कच्छ), प.भ. सोनलबेन मनोजकुमार पटेल (डांगरवा), प.भ. ठाकरसीभाई लालजीभाई (सालासर) । **मागसर वद-२** प.भ. विजयभाई विठ्ठलभाई शेलडीया (अहमदाबाद), प.भ. सिद्धार्थ स्वामिनारायण (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. कंचनबेन कांतिभाई (अहमदाबाद) । **मागसर वद-३** प.भ. सुरभी नील सावलीया (निकोल), प.भ.अ.नि. नाथाभाई चतुरभाई (लसुन्द्रा), प.भ. शांताबेन केशवलाल मीस्त्री (अहमदाबाद), प.भ. दिपकभाई धूलाभाई पटेल (वजापुर), प.भ. हार्दिक जगदीशभाई सांगाणी (निकोल), प.भ. अमितभाई शांतिलाल पटेल (नारदीपुर), प.भ. विठ्ठलभाई राजाभाई रामाणी (सुरत) । **मागसर वद-४** प.भ.अ.नि. कांताबेन कांतिलाल देसाई (अहमदाबाद), अ.नि. स्वामी विष्णुप्रसाददासजी गुरु स.गु. शा.स्वा. केशवचरणदासजी (कालुपुर मंदिर) । **मागसर वद-५** प.भ. अ.नि. लाभुबेन परसोतमभाई लहेरी (अहमदाबाद), प.भ. नीताबेन वी. पटेल (अहमदाबाद) । **मागसर वद-६** प.भ. नरसंगभाई कानाभाई राठोड (रामपरा) । **मागसर वद-७** प.भ. जयेशभाई धरमशीभाई पटेल (अहमदाबाद) । **मागसर वद-८** प.भ. हार्दिक महेन्द्रकुमार पटेल, प.भ. कुसुमबेन आर. पटेल (अहमदाबाद) । **मागसर वद-९** प.भ. हेमलताबेन प्रशांतभाई परमार (अहमदाबाद) । **मागसर वद-१०** प.भ. विक्रमभाई भगवानभाई पटेल (निकोल), प.भ. खुशीबेन निहालभई हिराणी (कच्छ), प.भ. रमेशभाई भाईलालभाई पटेल (असलाली), प.भ. विष्णुभाई जसवंतलाल धोलकीया (अहमदाबाद), प.भ. श्वेत पटेल (कलोल), प.भ. भाईलालभाई मावजीभाई सोनी (नडीयाद), प.भ.अ.नि. उमेशभाई वी. अमीन (अहमदाबाद), प.भ. कपीलाबेन धनसुखलाल मेवावाला (सुरत), प.भ. घनश्यामभाई ठक्कर (गांधीधाम), प.भ. हितेषकुमार भावसार (गांधीनगर) । **मागसर वद-११** प.भ. उजास महेन्द्रभाई पटेल (मुंबई), प.भ.अ.नि. प्रविणभाई केशवभाई अमीन (अहमदाबाद) । **मागसर वद-१२** प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. नवीनभाई शंकरभाई पटेल (अहमदाबाद), स.गु. पुराणी स्वामी हरिस्वरूपदासजी (खेरवा), प.भ. आर्यन-मानसी महेता (अहमदाबाद) । **मागसर वद-१३** प.भ. मंजुलाबेन धूलाभाई पटेल (सलाल), प.भ.अ.नि. पी.टी. मोरडीया (झिंझावदर), पू. स.गु. स्वा. राधारमणदासजी (खानदेशी-कुंडल) । **मागसर वद-१४** प.भ. चंदुभाई मनजीभाई पटेल (नडीयाद) । **मागसर वद-३०** प.भ.अ.नि. रवजीभाई खीमजी हालाई (मांडवी-कच्छ), प.भ.अ.नि. अरविंद मावजी हालाई (मांडवी-कच्छ), प.भ. अपेक्षा जीग्नेशकुमार पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. आशाबेन सतीषभाई शाह (अहमदाबाद) ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

पोष सुद-१ प.भ. हनुश्री, क्रियान हियान केतनभाई देसाई (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. भुलाभाई लालदास पटेल (उनावा), प.भ. केसरबेन रवजी हालाई (कोडकी-कच्छ), प.भ. शांतिलाल आत्माराम ठक्कर (शेला), प.भ. खुशील हरिकृष्ण पटेल (पोर), प.भ. कृणालभाई सुभाषभाई रादडीया (अहमदाबाद), प.भ. सागरभाई पंकजभाई सोलंकी (गोता), प.भ. कानजीभाई गोपालदास डावरा (अहमदाबाद) । **पोष सुद-२** प.भ. हसमुखभाई हरिराम राजगोर (नवी मुंबई), प.भ. अलकाबेन प्रफुलचंद्र पटेल (दहेगाम), प.भ. महेन्द्रभाई सोनी (जामनगर), प.भ. नीतिन मावजी वेकरीया (मिरझापर-कच्छ), प.भ.अ.नि. भाणबाई नारण राबडीया (रामपरवेकरा-कच्छ) । **पोष सुद-४** प.भ. अ.नि. रघुवीर प्रभुदास ब्रह्मभट्ट (नडीयाद), प.भ. कियान एन्ड विशान हेमांग मीस्त्री (अहमदाबाद), प.भ. भूपतभाई नारणभाई ढोलरीया (भमोदरा-मोटा) । **पोष सुद-५** प.भ. हिमांशुभाई भरतभाई गज्जर (अहमदाबाद), प.भ. शितलबेन अंबालाल पटेल (गोधरा), प.भ. राजेशभाई घनश्यामभाई वाणेसा (अहमदाबाद), दश गाम महिला मंडल (धमासणा), प.भ. दिनेशभाई कडवाभाई आंबलीया (राजकोट) । **पोष सुद-६** प.भ. मौलिकभाई मनसुखभाई कीडेछा (जूनागढ), प.भ. प्रेमबाई लक्ष्मणभाई जेसाणी (दहींसरा-कच्छ), प.भ. जसुमतीबेन हरिभाई पटेल (नारणपुरा) । **पोष सुद-७** प.भ. वालजी करशन हिराणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. द्रष्टि कनुभाई प्रजापति (अहमदाबाद), प.भ. शिवजी हिरजी धानाणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. रविकुमार हंसराजभाई ठुमर (निकोल) । **पोष सुद-८** प.भ. हरिशभाई त्रिवेदी (अहमदाबाद), प.भ. हसमुखभाई वडोदरीया (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. शर्मिष्ठाबेन रावजीभाई पटेल (शिलज), प.भ.अ.नि. रणछोडभाई जोराभाई पटेल (आकरूंद), प.भ.अ.नि. सिल्की बिन्देशभाई (गांधीनगर), श्री स्वामिनारायण मंदिर (दियोदर) । **पोष सुद-९** प.भ. सुंदरबेन मनजी हिराणी (कच्छ), प.भ. अतुलभाई कांतिभाई पटेल (धनसुरा), प.भ. वालभाई लालजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ) । **पोष सुद-१०** प.भ.अ.नि. शारदाबेन भीखाभाई पटेल (उनावा), प.भ. सुंदरबेन देवसीभाई (सुखपर-कच्छ) । **पोष सुद-११** प.भ.अ.नि. विश्रामभाई धनजीभाई भुडीया (मानकुवा-कच्छ), प.भ. विष्णुभाई दशरथभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ.अ.नि. कुबेरभाई रवजीदास पटेल (नाना-चिलोडा) । **पोष सुद१२/१३** प.भ. अभय - जीतुभाई भावसार (अमेरिका), प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. मयंकभाई कामदार (पोरबंदर), प.भ. बिन्देशभाई जे. पटेल (गांधीनगर), प.भ. मणीभाई सेंधाभाई चौधरी (माणेकपुर), प.भ. सतीष रमणभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. सविताबेन रसिकभाई (नारणपुरा), प.भ. रमेशकुमार रणछोडलाल मारफतीया (अहमदाबाद), प.भ. हार्दिक सुभाषभाई पटेल (नडीयाद), प.भ.अ.नि. वालबाई विश्राम हालाई (मांडवी-कच्छ), प.भ. ध्रुविनभाई जयंतीभाई सावज (सुरत), प.भ. रतनबेन नानजी हिराणी (सुखपर-रोहा) । **पोष सुद-१४** प.भ. परसोतमभाई मोहनभाई पटेल (लालोडा), प.भ. भावेश-पारूल भट्ट (अहमदाबाद), प.भ. वसंत भट्ट ज्हान्वी भट्ट (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. मिनुभाई चंद्रकांतभाई गडानी । **पोष सुद-१५** स्वामिनारायण संस्कारधाम (ध्रांगध्रा), प.भ. केनील विध्यांचल (अहमदाबाद), प.भ. अवनी वत्सल दवे (अहमदाबाद), प.भ. रमेश नारण खेताणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. कांताबेन मूलजीभाई रामाणी (अहमदाबाद). ।

पोष वद-१ प.भ. नटवरभाई आत्माराम पटेल (वडु), प.भ. शोभाबेन अनीलभाई मुलाणी (निकोल), प.भ. बाबुभाई के. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. द्रिशिवकुमार ध्रुव गोस्वामी (गांधीनगर), प.भ. उत्सव विजयभाई मीस्त्री (अहमदाबाद), प.भ. काशीबेन वल्लभभाई सेटा (समढीयाला), प.भ. नयनकुमार गीरीशभाई पटेल । **पोष वद-२** प.भ. चंद्रिकाबेन शुकल (अहमदाबाद), प.भ. ईलेशभाई गोविंदभाई रामदास (अहमदाबाद), प.भ. डॉ. प्रतिक्षाबेन चिंतनकुमार पटेल (उनावा), प.भ. परेशभाई नागजीभाई सावलीया (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. श्रवणकुमार सोनाजी (जोधावा-राज.) । **पोष वद-४** प.भ. धनबाई विश्राम हालाई (कोडकी-कच्छ), प.भ.अ.नि. सोनाजी माधाजी के मोक्षार्थे (जोधावा-राज.), प.भ. महेश लालजी वेकरीया (रामपर-कच्छ) । **पोष वद-५** प.भ.अ.नि. नरेन्द्रभाई हडीया (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. कोकीलाबेन कृष्णकांतभाई सोनी (साणंद) । **पोष वद-६** प.भ. गीताबेन प्रविणभाई, प.भ.अ.नि. रूखीबेन परसोतमदास पटेल (मालवण) । **पोष वद-७** प.भ. अ.नि. डाह्याभाई चेलाभाई बूटीया (कालीयाणा), प.भ. प्रियान्सीबेन हिरेन गजेरा (सुरत) । **पोष वद-८** प.भ. निलभाई भरतभाई राबडीया (मांडवी-कच्छ), प्रजापति महिला मंडल (नासिक), प.भ. श्रेयसभाई अशोकभाई पटेल (मोटा फोफलीया), प.भ.अ.नि. अंबाबेन नटवरभाई पटेल (विजापुर), प.भ. मधुबेन जयंतीभाई वि. पटेल (राणीप), प.भ. हरजीवनदास मनसुखभाई पटेल (रनेला), प.भ.अ.नि. निरवभाई दिपकभाई आदेसरा (शियाणी), प.भ.अ.नि. शामजीभाई शंभुभाई दावरा (अहमदाबाद), प.भ. हिराबेन प्रभुदास सोनी (अहमदाबाद), प.भ. हिनील- निरव (कोबा), प.भ.अ.नि. प्रविणचंद्र दलसुखराम रावल (कालीयाणा), प.भ. कौशलभाई विजयभाई जोशी (अहमदाबाद), अ.नि. स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी ९ मी पुण्यतिथि निमित्ते (कालुपुर मंदिर), प.भ. भरतभाई रावजीभाई पटेल । **पोष वद-९** प.भ. जीगुशाबेन प्रकाशभाई शाह (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. रामजी नारण छभाडीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. संजयभाई पटेल (उनावा), प.भ. कमलेशभाई शाह (अहमदाबाद), प.भ. हंसाबेन प्रविणचंद्र पटेल (अहमदाबाद), प.भ. जानवी प्रियांसी अने हिनाली जयेशभाई पटेल । **पोष वद-१०** सांख्ययोगी पुरबाई करशन आसाणी (मांडवी-कच्छ), प.भ. जादवा झीणा गोरसीया (सुखपर-कच्छ) । **पोष वद-११** प.भ. सोमाभाई रणछोडदास पटेल (लींबोया), प.भ. पटेल परिवार (त्रिभोवनदास) (अहमदाबाद) । **पोष वद-१२** प.भ. विष्णुभाई अंबालाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. संजयभाई बाबुभाई दुधात (अहमदाबाद), प.भ. आशिष जीवणभाई चौधरी (ईन्द्रपुरा), प.भ. विजयभाई घनश्यामभाई

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

राठोड, प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. निहारीका दलसुखभाई देवाणी (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. पुतलीबेन सरधारा (निकोल), प.भ. मंजुबेन अशोकभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. रमेश गांगजी गोरसीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. गीरीशभाई सोनी (बेंग्लोर), प.भ. साकरबेन ईश्वरभाई पटेल, प.भ. बिनीताबेन भद्रेशभाई कोटडीया (निकोल), प.भ. अ.नि. ललीताबेन वेलजीभाई वाजा (अहमदाबाद), प.भ. सतीषभाई कनुभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. दिव्येशबेन भावेशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. कस्तुरबेन दिनेशभाई भुडीया (नारणपुरा), प.भ. विपुलभाई हिंमतभाई क्याडा । **पोष वद-१३** प.भ. वत्सल राजेशभाई पटेल (डांगरवा), प.भ. शंकरभाई ईश्वरभाई पटेल (कोठारी कनीपुर), प.भ. दयालभाई गांगाणी (नवावाडज), प.भ. राकेश रमेशचंद्र ब्रह्मभट्ट (अहमदाबाद) । **पोष वद-१४** प.भ. गोविंदभाई मोहनभाई (अहमदाबाद), प.भ. श्यामभाई सुतरसूडीया (निकोल), प.भ. जीनलबेन चिरागकुमार । **पोष वद-३०** प.भ. राजीव अरविंदभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. नरेशभाई बचुभाई कोटडीया (अहमदाबाद), प.भ. मंजुलाबेन गोविंदभाई (खांडवाला) (अहमदाबाद) ।

महा सुद-१ पूज्य बिन्दुराजा (स्वा. बाग-मेमनगर), प.भ. संदिपभाई भरतभाई शेठ (अहमदाबाद) । **महा सुद-२** प.भ. कृणाल बिपीनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मानबाई लालजी राबडीया (सरली कच्छ), प.भ. मुकेशभाई हिराभाई पटेल (मोयद), प.भ. पार्थभाई चौधरी (प्रतापपुरा) । **महा सुद-३** प.भ. कमलेशभाई नथुभाई पटेल (करमसद), प.भ. डॉ. भीमाणी डॉ. अभिराज (निकोल), प.भ. डी. एम. वेकरीया (अहमदाबाद) । **महा सुद-४** प.भ. भावनाबेन राजेशकुमार पटेल, प.भ. दर्पेश कनुभाई पटेल (अहमदाबाद) । **महा सुद-५** प.भ. श्रेय दर्शनभाई पटेल (अहमदाबाद) । **महा सुद-६** प.भ. बी. के. चौधरी परिवार (माणेकपुर), प.भ. सर्वम हसमुखभाई का. पटेल (बालासिनोर) । **महा सुद-७** अ.नि. निर्मलाबेन देवेन्द्रप्रसाद कंसारा (अहमदाबाद), प.भ. मुकुंदभाई एम. पूजारा (अहमदाबाद), प.भ. वत्सलकुमार कमलेशकुमार पटेल (अहमदाबाद) । **महा सुद-८** प.भ. धीरज कांतिलाल रादडीया (सुखपर-कच्छ) । **महा सुद-९** अ.नि. कानबाई कानजी वेकरीया (बलदीया-कच्छ), प.भ. प्रेमीलाबेन पटेल (लतीपुरा) । **महा सुद-१०** प.भ. उषाबेन मगनभाई भादाणी (बोपल), प.भ. विनितकुमार रमेशभाई परीख (बोपल), प.भ. जगदिपकुमार ठाकरसीभाई पटेल (जामसर) । **महा सुद-१२** प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. जशोदाबेन नारण राघवाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. कवि जय मनोजभाई ब्रह्मभट्ट (नारणपुरा), प.भ. पराग मस्की (अमेरिका), स.गु.शा. स्वा. धर्मस्वरूपदासजी (अहमदाबाद), प.भ. गोमतीबेन कांतिलाल पटेल (राणीप), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ) । **महा सुद-१३/१४** अ.नि. पुरीबेन विठ्ठलदास पटेल (डांगरवावाला), प.भ. हेतलकुमार गुणवंतलाल सोनी (अहमदाबाद), प.भ. चंद्रिकाबेन लल्लुभाई मांगुकीया (बाढडा), प.भ. केयुर हिरेन्द्रभाई (अहमदाबाद) । **महा सुद-१५** प.भ. अरविंदभाई अंबालाल (पलीयड), प.भ. आरती ध्रुविल सिंगाला (लंडन) ।

महा वद-१ प.भ. दिपक कानजीभाई राघवाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. पंकजभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. जील हितेन्द्र पटेल (अहमदाबाद) । **महा वद-२** प.भ. डॉ. कृपाली कांतिभाई सावलीया (सुरत), प.भ. धृतिबेन दक्षेशभाई पटेल (हैद्राबाद), प.भ. कामेशभाई उजमशीभाई ठक्कर (वासणा), प.भ. बिन्दुबेन निलेशभाई पटेल (अहमदाबाद), चि. डॉ. श्रेयाना लग्न प्रसंगे (पोर), प.भ. मणीभाई रणछोडभाई पटेल । **महा वद-४** प.भ. धाराबेन गौरवभाई भावसार (गांधीनगर), पुष्पम विरेनभाई पटेल (हलवद) । **महा वद-५** प.भ. रूद्र यश पाटडीया (अहमदाबाद) । **महा वद-६** प.भ. गीरीशभाई कनैयालाल पंचाल (अहमदाबाद), अ.नि. डॉ. रमणभाई शंकरभाई पटेल (करजीसण), प.भ. केशाबाई मावजी केराई (बलदीया-कच्छ) । **महा वद-७** प.भ. मितेषभाई बिपीनभाई ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. जसुमतीबेन जयंतीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. ब्रिआ भाग्येश महेन्द्रभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अमरशीभाई हरजी सथवारा (अहमदाबाद), प.भ. शिल्पाबेन योगेशभाई मोदी (अहमदाबाद), प.भ. विष्णुभाई विठ्ठलदास पटेल (रायसण) । **महा वद-८** प.भ. हनीबेन धवलकुमार पटेल (उंझा), प.भ. ज्योत्सनाबेन राजेन्द्रभाई दरजी (न्युजर्सी) । **महा वद-९** अ.नि. कानजीभाई नारणभाई पोकार (दयापर-कच्छ), प.भ. दिनेशकुमार पोपटलाल पटेल (मोखासण), अ.नि. रमेशकुमार काशीभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. धर्मेन्द्रभाई जगाभाई भुवा (वडोदरा), प.भ. शामजी मुखशी (मांडवी-कच्छ), प.भ. प्रेमजी लालजी हिराणी (मांडवी-कच्छ), प.भ. अल्पाबेन कृणालभाई नाकराणी (अहमदाबाद) । **महा वद-१०** प.भ. भोलीदास मोतीदास पटेल (राणीप), प.भ. जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (ओलावाला), प.भ. जीत रमेशभाई पूजारा (धोलका), अ.नि. कांतिभाई जीवाभाई पटेल (झुंडाल) । **महा वद-११** अ.नि. रतनबेन कल्याण राबडीया (रामपर-वेकरा), प.भ. करशन शामजी राबडीया (सरली-कच्छ) । **महा वद-१२** प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. करशनभाई हरगोवनदास पटेल (न्यु राणीप), प.भ. सोमाभाई भगाभाई चौधरी (सोलैया), हनिकन एन्ड थ्रील कां. (मुंबई), प.भ. सोहिलकुमार सुरेशभाई चौधरी (हिंमतपुरा), प.भ. यशवंतभाई डी. पटेल, प.भ. शिवांस काछडीया (निकोल) । **महा वद-१३** प.भ. धैर्य तथा द्रष्टि शिवम पटेल (गांधीनगर), प.भ. जीग्नेश रमेशभाई पटेल । **महा वद-१४** प.भ. केशव विष्णुभाई वरसाणी (सुखपर-कच्छ), सांख्ययोगी केशरबाई कुंवरजी (सूरजपर-कच्छ) । **महा वद-३०** प.भ. रतनबेन हरजी भंडेरी (गोधरा-कच्छ), प.भ. घनश्याम जीवराज जोबनपुत्रा (राजकोट), प.भ. भोगीभाई मोतीभाई पटेल (मोयद) ।

श्री स्वामिनारायण

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

फागण सुद-१ प.भ. नितीनभाई भाईलाल ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. कपीलाबेन प्रविणभाई पटेल (राजपुर), प.भ. बलदेवभाई गोरधनभाई (घनश्यामनगर), अ.नि. चंदुभाई केशवलाल पटेल (बावला) । **फागण सुद-२** प.भ. अश्विनभाई शिरोया (अहमदाबाद), प.भ. मिलोनी विद्युतभाई जोशी (अहमदाबाद) । **फागण सुद-३** प.भ. घनश्यामभाई रेवाभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. नटवरभाई वेलजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अनीलभाई पीतांबरभाई पटेल (धरमपुर), प.भ. नरेन्द्रभाई परसोतमभाई पटेल (आणंद) । **फागण सुद-४** अ.नि. सुनिताबेन हसमुखभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. रोनक विष्णुभाई पटेल (अहमदाबाद) । **फागण सुद-५** प.भ. शैलेषभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. महेन्द्रभाई विनोदराय महेता (अहमदाबाद), प.भ. राजुभाई पी. पटेल, प.भ. मितेनकुमार अरविंदभाई पटेल (रनेला), प.भ. जयेशभाई जयंतीलाल पाटडीया (अहमदाबाद), प.भ. मिहीरभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ. धीरजभाई करशनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. देवांशी देवर्षकुमार (अहमदाबाद), प.भ. भावेशभाई रवजीभाई चोथानी (सुरत), प.भ. हेमाबेन वसेटा (अहमदाबाद) । **फागण सुद-७** अ.नि. गटोरभाई जगमालभाई परमार (वासण), प.भ. धवलभाई भावसार (ओस्ट्रेलीया), प.भ. नित्याप काछडीया (अहमदाबाद), प.भ. पूर्विकाबेन प्रितेशकुमार पटेल (वडु), श्री स्वामिनारायण गुरुकुल (राजकोट) । **फागण सुद-८** प.भ. विनोदकुमार केशवलाल पटेल (गांधीनगर), प.भ. देवराजभाई पटेल (वेलावदर), प.भ. अक्षयकुमार विष्णुभाई पटेल (डांगरवा) । **फागण सुद-९** प.भ. कोकीलाबेन जयंतीलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. उषाबेन मुकेशकुमार पटेल (अहमदाबाद), अ.नि. हिरबाई कानजी हिराणी (सुखपर-रोहा-कच्छ) । **फागण सुद-१०** अ.नि. गांगजी करशन (मांडवी-कच्छ), प.भ. महेराराम थानाराम चौधरी (वाली-राज.) । **फागण सुद-११** प.भ. कानबाई विसराम (सुखपर-कच्छ) । **फागण सुद-१२** प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. मनुभाई शंकरभाई पटेल (उनावा), प.भ. दक्षाबेन अमितभाई पटेल (डांगरवा), प.भ. सविताबेन डाह्याभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अक्षर मित भावसार (अहमदाबाद), प.भ. कमलाबेन भीखाभाई पटेल (विहार) । **फागण सुद-१३** प.भ. केयुरभाई बाबुभाई काछडीया (जगतपुर), प.भ. रवजी मावजी भुडीया (माधापर-कच्छ), प.भ. धर्म बिन्देश पटेल (गांधीनगर), प.भ. ईश्वरभाई चुनीभाई ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. घनश्यामभाई शंकरदास पटेल (मोखासण), प.भ. भगवानभाई शंकरभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. हर्षदभाई लालभाई पटेल (शिलज), अ.नि. पोपटलाल केशवलाल पटेल (डांगरवा), प.भ. रमेशभाई वालजीभाई काथरोटीया (निकोल) । **फागण सुद-१४** प.भ. लालजी रामजी भंडेरी (सुखपर-कच्छ), अ.नि. राधाबेन हरजी भंडेरी (सुखपर-कच्छ), प.भ.अ.नि. रणछोडभाई लालभाई चौधरी (बालवा) । **फागण सुद-१५** प.भ. मशील कल्पेश पटेल (झुलासण), अ.नि. हरिभाई भीखाभाई जीवाणी (मोटी कुंडल), प.भ. मनसुख खीमजी छभाडीया (मांडवी-कच्छ), निलकंठ लेन्ड स्केप एसोसीएट प.भ. भाविक पटेल (उनावा), प.भ. रतीभाई मफतभाई पटेल (उनावा) ।

फागण वद-१ यजमानश्री फुलदोलोत्सव प.भ. रामदास बापा परिवार प.भ.श्री भाविक पटेल (उनावा), प.भ. जाह्नवी भूमिलकुमार पाटडीया (सुरत), देवकृपा परिवार (अहमदाबाद), प.भ. अल्काबेन जगदीशभाई पटेल (अहमदाबाद) । **फागण वद-२** प.भ. निमित भुराभाई पटेल (राणीप). **फागण वद-३** प.भ. दिपक घनश्यामभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. कौशल रोहितभाई सुथार (अहमदाबाद), प.भ. धरमशीभाई (सुरत) । **फागण वद-४** प.भ. ईवान ब्रिजेशभाई पटेल (गांधीनगर) । **फागण वद-५** प.भ. अल्केशकुमार शंकरभाई पटेल (आंतरसुबा), प.भ. मस्टी जय पटेल (गांधीनगर), प.भ. हितेषकुमार रमणलाल पटेल (झुंडाल), प.भ. उदयभाई परीख (मुंबई), पटेल आईस्क्रीम (क्रीमआर्ट) (अहमदाबाद), प.भ. विजयभाई हरगोविंदभाई पूजारा (अहमदाबाद) । **फागण वद-६** अ.नि. प्रेमालमूर्ति पूज्य स.गु. स्वामी कृष्णप्रसाददासजी (भुज), प.भ. ध्यानि हितेषभाई पटेल (चांदखेडा), प.भ.अ.नि. रत्नाभाई केसरा केराई (केरा-कच्छ), प.भ. विनोदभाई वल्लभभाई कथीरीया (सुरत) । **फागण वद-७** अ.नि. नारण मावजी पाधरा (मदनपुर-कच्छ) । **फागण वद-८** अ.नि. मानबाई देवजी वेकरीया (नारणपर-कच्छ) । **फागण वद-९** प.भ. अनिताबेन गीरीशभाई पटेल (वडु), अ.नि. स्वामी भक्तिवल्लभदासजी (मुंबई) । **फागण वद-१०** अ.नि. चैतन्य स्वामी (लोज), प.भ. मितलबेन ए. ठुम्मर (अहमदाबाद), अ.नि. जमकुबेन अरजण सोनी (वलसाड), प.भ. बिन्देश जयंतिलाल भावसार (नारदीपुर), पूज्य बिन्दुराजा (स्वा. बाग-मेमनगर), प.भ. बिपीनभाई पटेल परिवार (अहमदाबाद) । **फागण वद-११** प.भ. वालजी करशन हिराणी (बलदीया-कच्छ) । **फागण वद-१२** प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. केयुरकुमार जुरेल (वलसाड), प.भ. अश्विनभाई भीमजी हालाई (मेघपर-कच्छ), प.भ. चंपाबेन गोकलभाई पंचाणी (अहमदाबाद), प.भ. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (शिलज), प.भ. मधुबेन परसोतमदास पटेल (अहमदाबाद), प.भ. नेहा पी. चावडा (बेंग्लोर) । **फागण वद-१३** प.भ. धवलभाई नवीनभाई वरसाणी (भारासर-कच्छ), प.भ. जयंतकुमार नटवरलाल झिंझुवाडीया (अहमदाबाद), प.भ. मुकुंदभाई पडशाला (हेमाल), प.भ. शिवलाल कानजीभाई मीस्त्री (भावनगर) । **फागण वद१४/३०** अ.नि. वालबाई हरजी वाघजीयाणी (सुखपर-कच्छ), अ.नि. नगीनभाई हरजीवनदास शेठ (बावला), प.भ. जसुबेन रमेश जेसाणी (बलदीया-कच्छ) ।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From** : Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji




मेमका (मूली प्रदेश) मंदिर काँ २० वाँ पाटोत्सव पर ठाकुरजी की आरती उतारते और सभा में दर्शन देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।




उनावा मंदिर के पाटोत्सव पर ठाकुरजी की आरती उतारते तथा सभा को आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।




पाटण नूतन मंदिर की भूमि पूजा करते प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ।



छपिया मंदिर द्वारा पुलिस चोकी का निर्माण करके प्रशासन को हस्तगत करते महंत स्वामी तथा संत ।



दियोदर मंदिर का १० वाँ पाटोत्सव पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते प.पू.

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd Unaccountable L1 i/o. on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026





लेस्टर (यु.के.) मंदिर के सभा में युवक एवम् बच्चो की आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री





विल्सडनलेन (यु.के.) मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारते प.पू. लालजी महाराजश्री ।



ब्रोमली (यु.के.) मंदिर मे सभा को दर्शन देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।



कालुपुर मंदिर समक्ष लंगाटा (अफ्रिका) से आये बेगपाईपर बेन्डे धून बजाई थी ।





अहमदाबाद तथा आस-पास के युवक मंडल-बाल मंडल के संचालकने के समेलन मे श्री स्वा. म्यूजियम मे सभा में दर्शन देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

Praful Kharsani